RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 12	अंक : 5	मुम्बई, अगस्त 2022	पृष्ठ : 36	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 12	ISSUE :5	MUMBAI, AUGUST 2022	PAGES : 36	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2548

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान, ऐलोरा गुफा-महाराष्ट्र

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 12 अंक 5 अगस्त 2022

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ रामअजोर दुबे
सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
श्री प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

मेरी तीर्थ यात्रा	6
अलौकिक व्यक्तित्व के धनी : आचार्य विमलसागर जी महाराज	8
सच्चे गुरुओं का स्वरूप	10
भगवान महावीर का २५५० वाँ निर्वाणोत्सव व हमारे कर्तव्य	11
रचनात्मक सूत्र प्रदान करती हैं तीर्थंकर पार्श्वनाथ की शिक्षाएं	15
श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा	17
आजादी के आंदोलन में जैन भी हुए थे शहीद	20
JAIN SITES OF TAMILNADU	24
धर्म सम्मत दलों को तो श्रमण तीर्थों का संरक्षण करना चाहिये	33

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 / 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रिवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष) : 2500 रुपये

अध्यक्ष की कलम से .....

सादर जय जिनेन्द्र,

अत्यंत हर्ष एवं सुखद अनुभव कर रहा हूँ कि हमने पिछले 2 वर्षों से भारत देश में कोरोना महामारी के प्रकोप के कारण देशभर में व्याप्त तालाबंदी एवं धार्मिक स्थलों के बंद होने से कोई भी धार्मिक कार्यक्रम को सामूहिक रूप से शामिल होकर इतने स्वतंत्र रूप से नहीं मनाया परन्तु इतने दिनों के अंतराल के बाद तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण कल्याणक महोत्सव श्रावण सुदी सप्तमी (4 अगस्त, 2022) को हम सभी ने बड़े धूम-धाम के साथ भक्तिभावपूर्वक मनाया। इस अवसर का आतुरता से इंतजार करते हुए देश-विदेश के हजारों श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ की निर्वाण स्थली श्री सम्मेदशिखरजी स्थित स्वर्णभद्र कूट (पारसनाथ टोंक) पर बड़े ही हर्ष-उल्लास के साथ निर्वाणलाडू चढ़ाकर पुण्यार्जन किया।

सर्वप्रथम मैं सम्मेदशिखरजी में विराजमान समस्त आचार्यों, मुनि-महाराजों तथा आर्यिका-माताओं को नमोस्तु/वन्दामी पूर्वक सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से हार्दिक आभार व धन्यवाद प्रकट करता हूँ। सर्वविदित ही है कि परमपूज्य अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी ऋषिराज पर्वतराज पर विराजमान उत्कृष्ट सिंहनिष्क्रीड़ित व्रतों की आराधना मौनव्रत के साथ तपस्या में लीन हैं। आचार्य श्री की परम तपस्या के प्रभाव से चौपड़ाकुण्ड मंदिर जी के दर्शन हम सभी को उपलब्ध हो रहे हैं। वर्षों से बंद पड़ा चौपड़ाकुण्ड मंदिर तथा मधुबन स्थित सम्मेदाचल विकास कमेटी द्वारा संचालित श्री पार्श्वनाथ जिनालय के खुलने में पूज्य श्री अंतर्मना की वृहद् तपाराधना की ही प्रधानता रही जिनके परम प्रभाव से तत्संबंधित पहल कार्यकारी रही । आज गुरुदेवश्री के समाजोपकारी इस पुण्यकार्य से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सम्पूर्ण जैन समाज नत मस्तक हो गौरान्वित हो रहा है। आचार्य श्री के मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से स्वर्णभद्र कूट (पारसनाथ टोंक) को स्वर्ण के समान बनाया गया है।

निर्वाण कल्याणक महोत्सव के समस्त कार्यक्रम षटरस त्यागी वयोवृद्ध स्थविराचार्य श्री संभवसागर जी महामुनिराज के परम आशीर्वाद से पूज्य श्री अंतर्मना के मंगल सान्निध्य में संपन्न हुए। इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री प्रमुखसागर जी, आचार्य श्री विशदसागर जी, आचार्य श्री गुणभद्रनंदी जी, आचार्य श्री निपूर्णानंदी जी, वात्सल्यमूर्ती मुनिराज श्री पुण्यसागरजी ससंघ, पूज्य मुनिश्री प्रमाणसागरजी तथा आर्यिका श्री सुरत्नमति माताजी, आर्यिका श्री विशाखामति माताजी, आर्यिका श्री शुभमति माताजी, आर्यिका श्री विश्वधर्मश्री माताजी सहित समस्त चतुर्विध संघ का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

इस बार सम्मेदशिखर जी पर अधिक यात्रियों के पधारने का अनुमान लगाया जा रहा था और हुआ भी ऐसा ही। तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में हमने हमारे पादाधिकारियों के साथ महीनों पूर्व से महोत्सव की तैयारियों की योजना बना ली थी। दो साल के लम्बे अंतराल के बाद मोक्ष सप्तमी के दिन देश-विदेश से हजारों की श्रृंखला में यात्रीगण पधारे जिनकी सुरक्षा आदि की व्यवस्था तीर्थक्षेत्र कमेटी ने जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन की। तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से आने वाले सभी यात्रियों के लिए स्वास्थ्य चिकित्सा सम्बन्धी व्यवस्थाओं को प्राथमिकता देते हुए पहाड़ पर तथा नीचे तलहटी स्थित शाखा कार्यालय में चिकित्सा (मेडिकल) केम्प लगाये गये थे साथ ही हमने आपातकालीन सेवा के लिए जगह-जगह एम्बुलेंस तैयार (प्राथमिक चिकित्सा सहित) रखी थी। पहाड़ पर यात्रियों की सुविधा एवं कार्यक्रम निर्विघ्न संपन्न करने के लिए वीर सेवादल के लगभग 20 वालेण्टियरों का सहयोग भी हमें प्राप्त हुआ, साथ ही कमेटी के सभी सेवाकर्मियों का उत्साह पूर्वक सहयोग प्राप्त हुआ जिनका में हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ। इसके अतरिक्त कमेटी की ओर से मधुबन सहित सम्पूर्ण पर्वतराज पर जगह-जगह स्वागत द्वार व साजसज्जा की गयी थी।

क्षेत्र पर पाधारे दर्शनार्थियों के लिए अनेकों जगह जलपान आदि की व्यवस्था का बंदोबस्त किया था।

शाश्वत सिद्धक्षेत्र पर 20 पंथी कोठी से जिन्नेद्र प्रभु की प्रतिमा जी को स्वर्णभद्रकूट ले जाकर श्रीजी का अभिषेक-शांतिधारा करने के सुअवसर प्राप्त हुआ। जो श्रद्धालुगण सम्मेदशिखर जी नहीं पधार सके उनके लिए जिनवाणी चैनल के माध्यम से कार्यक्रम आयोजन का सीधा प्रसारण किया गया जिसे देश की जैन समाज ने घर-बैठे देखकर धर्म लाभ लिया।

इस अवसर पर हमारे साथ जैन श्रावक शिरोमणि, धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री तरचंद जी जैन एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के परम संरक्षक आदरणीय श्री अशोक जी पाटनी सपत्नीक, श्री विजय जी चूड़ीवाल गौहाटी, श्री ऋषभकुमार जी अहमदाबाद, श्री अशोक कुमार जी बड़ोदा, श्री संजय पापड़ीवाल जी, श्री संजय जी जैन, श्री मनोज जी जैन धनबाद, श्री प्रभात जी सेठी गिरिडीह आदि महानुभाव सम्मेदशिखर पर निर्वाण लाडू महोत्सव में सम्मलित हुए।

विदित है कि अगले माह ऋषिपंचमी 1 सितम्बर 2022 से पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व प्रारम्भ होने जा रहे हैं। पिछले दो वर्षों में देश के सभी छोटे-बड़े नगरों में पर्युषण पर्व पर हमें वृहद् आयोजन करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है परन्तु अब हमें पूर्ण भक्ति भाव के साथ विभिन्न आयोजन संपन्न करने का अवसर प्राप्त होने जा रहा है। यह पर्व हमारे जीवन में धर्म के स्वरूप को समझाते हैं और इन दश धर्मों को अंगीकार करते हुए हम मोक्ष साधना की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

उत्तम क्षमा से प्रारम्भ यह दश धर्म क्रमशः हमें क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, अकिंचन एवं ब्रह्मचर्य की शिक्षा प्रदान कराते हैं। जिस प्रकार सम्मेदशिखर अनादिनिधन तीर्थ है उसी प्रकार यह दश धर्मों का पर्व अनाधिनिधन पर्व है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे तीर्थों और ऐसे पावन पर्वों को मानने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

पर्युषण पर्व पर अनेक श्रद्धालुगण व्रत, उपवास कर तप आराधना पूर्वक संयम की साधना करते हुए धर्म ध्यान करते हैं। मैं ऐसे सभी त्यागी व्रतियों, श्रावकों के द्वारा किये जा रहे व्रत उपवास, तपआदि निर्विघ्न संपन्न होने की कामना के साथ आप के पुण्य की अनुमोदना करता हूँ।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

तीर्थों के बिना जैनधर्म 'अपूर्ण'

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि तीर्थों के बिना जैनधर्म अपूर्ण है! जैन धर्म का अस्तित्व एवं पहचान हैं- तीर्थक्षेत्र। हम सभी यह जानते हैं कि यह संसार छः द्रव्यों से मिलकर बना है जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। इन छः द्रव्यों से संसार का संचार हो रहा है जिसमें एक द्रव्य है **काल** जिसे हम सहज भाषा में **समय** भी कहते हैं। भगवान महावीरस्वामी ने बताया है कि कालचक्र छः भागों में विभाजित है प्रथमकाल, द्वितीयकाल, तृतीयकाल, चतुर्थकाल, पंचमकाल और षष्टमकाल। इन कालों का समय कोड़ाकोडी सागर से प्रारम्भ होकर अंतिम काल 21 हजार वर्ष का होता है। यह काल चक्र भी दो अवस्था से सदैव चलता रहता हैं उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी। वर्तमान में अवसर्पिणी काल चल रहा है और कालदोष से यह हुंडावसर्पिणी काल हो गया। ऐसे कोड़ाकोडी सागरों का एक काल होता है जिसकी वर्तमान के वर्षों में गणना करना हमारी गणित से परे है। प्रत्येक काल चक्र में 24 तीर्थंकरों की उत्पत्ति होती है। ऐसे अनन्त वर्षों में मात्र 24 तीर्थंकर!

ऐसे अनन्त वर्षों में मात्र 24 तीर्थंकरों का जन्म होना और उनके द्वारा बताया गया धर्म कोड़ाकोडी सागरों की कालसीमा के बाद भी हमें प्राप्त होना यह विस्मय की बात है! परन्तु इसका श्रेय हमारे तीर्थक्षत्रों का है। सागरों जैसी लम्बी कालअवधि के अंतराल के बाद तीर्थंकर जन्म लेते हैं और इन्हीं तीर्थंकर द्वारा हमारे तीर्थों का प्रवर्तन होता है जिससे इस भरतक्षेत्र में तीर्थंकर तो सदा विद्यमान नहीं रहते परन्तु तीर्थ अवश्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि के रूप में विद्यमान रहते हैं। जिनमें शाश्वत तीर्थक्षेत्र श्री अयोध्याजी व शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी अनादिनिधन तीर्थ हैं जिन पर काल का भी प्रभाव नहीं पड़ता।

हम अपना परम सौभाग्य समझते हैं कि तीर्थंकरों द्वारा प्रवर्तित ऐसे पावन तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण-संवर्धन करने का हमें अवसर प्राप्त हो रहा है और जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों द्वारा तीर्थ का प्रवर्तन सम्पूर्ण मानव जाति एवं समस्त जीवों के कल्याण के लिए होता है। तीर्थंकर भगवान तीर्थों का प्रवर्तन कर या कहें तो तीर्थों को हमें सौंप कर निर्वाण को प्राप्त हो जाते हैं और उनके द्वारा सौंपे हुए तीर्थ का संरक्षण-संवर्धन करना अब हमारा कर्तव्य हो जाता है।

वर्तमान में बहुत दुखद एवं चिंताजनक विषय है कि हमारे तीर्थों पर अनधिकृत रूप से अतिक्रमण किये जा रहे हैं, हमसे हमारा अस्तित्व छीना जा रहा है। परन्तु हमारी राष्ट्रीय संस्था जिसे हम सबने दिगम्बर जैनों के प्रतिनिधि के रूप में वर्षों पहले तैयार किया था आज वह संस्था **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी** हमारी ताकत है, तीर्थक्षेत्र कमेटी हमेशा से पंथवाद आदि विभिन्न कुरीतियों से हटकर सिर्फ तीर्थों के संरक्षण-सवर्धन के लिए कार्य करती आ रही है। साथ ही हम सभी प्रत्येक जैन धर्मावलम्बियों का कर्त्तव्य है कि वह तीर्थों की सुरक्षा, संवर्धन के लिए तत्परता से आगे आकर तन-मन-धन से तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग कर तीर्थों की सुरक्षा हेतु अपना योगदान सुनिश्चित करें।

जैसा कि हम गत महीनों से आपका ध्यान श्री सम्मेदशिखर जी केस की ओर आकर्षित कराते आ रहे हैं कि सम्मेदशिखर जी का केस अभी भी हम सब के समक्ष एक चुनौती बना हुआ है जिसकी पैरवी कुछ दिनों बाद सुप्रीम कोर्ट दिल्ली में होनी है। श्री सम्मेदशिखर केस के लिए हमें समाज से सहयोग भी प्राप्त हुआ है मैं उनका कमेटी की ओर से हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ। साथ ही मैं समस्त दिगम्बर जैन समाज से अपील करता हूँ कि श्री सम्मेदशिखर जी केस में विजय श्री को प्राप्त करने के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को तन-मन-धन से सहयोग कर अपना बल प्रदान करें।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

वर्षायोग संस्कृति के संरक्षण का अवसर है

यत्र-तत्र-सर्वत्र जहाँ जहाँ के श्रावकों का पुण्य प्रबल था, वर्षायोग की स्थापना हो चुकी है। सावन-भादों माह में यानी प्रारम्भ के 2-2½ माह युवाओं का उत्साह चरम पर होता है। नित नये युवा साधुओं के सम्पर्क में आकर

1 - वैय्यावृत्ति

2 - आहार चर्या

3 - निहार चर्या एवं

अन्य व्यवस्थाओं में अपना योगदान करते हैं। यदि कुछ बुजुर्ग संतों की बात छोड़ दे तो अब साधु भी प्रायः त्याग मार्ग पर चलने का उपदेश कम ही देते हैं। इसके बजाय वे ज्यादा से ज्यादा युवाओं को स्वयं के संघ से जोड़ने पर जोर ज्यादा देते हैं। जो संस्कारों के निर्माण हेतु जरूरी भी है।

पर्यूषण पर्व के पहले एवं बाद में संगोष्ठियों का दौर चलेगा। यद्यपि इनके महंगी (व्यय साध्य) हो जाने से एवं नये श्रेष्ठियों का इस ओर रुझान घट गया है। नये पैसे वाले ऐसा काम करना चाहते हैं जिसमें खर्च न्यूनतम हो एवं प्रचार अधिकतम हो। फोटो ज्यादा खिंचे, समाचार पत्रों में न्यूज छपे, संस्कृति का कोई भला हो या न हो। इससे संस्कृति संरक्षण का काम करने वाली पुरानी संस्थायें भी अपना रास्ता बदल चुकी है। पहले सराकोद्धारक, राष्ट्रसंत **आचार्य श्री ज्ञानसागरजी** इस कार्य में अग्रणी रहते थे। अब **गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी** ने 19-22 सितम्बर 22 के मध्य **तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ** के अधिवेशन के निमित्त से विशाल विद्वत् सम्मेलन बुलाया है जिसमें शताधिक विद्वान शाश्वत तीर्थ अयोध्या के इतिहास, पुरातत्व, भावी विकास की संभावनाओं पर मंथन करेंगे। इस तरह हमारा शाश्वत तीर्थ विकसित होगा। उनके कार्यकर्ता **पूज्य श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी** के मार्गदर्शन में उ.प्र. शासन एवं केन्द्र शासन के सहयोग से अनेक योजनाओं को क्रियान्वित कर रहे हैं। वहाँ मन्दिरों के निर्माण में केवल दिगम्बर जैन समाज के धन का ही उपयोग किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में **पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी** के 34वें दीक्षा दिवस (08-08-2022) के अवसर पर व्यक्तिशः उपस्थित होकर मैंने कार्यकर्ताओं से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में तीर्थ विकास विषयक विस्तारपूर्वक चर्चायें की। जैन तीर्थवन्दना परिवार आगमनिष्ठ, युवकोपयोगी, समधुर व्याख्यान करने वाली, आशुकवियत्री, **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी** के रत्नत्रय वृद्धि की कामना करता है। हमें विश्वास है मन्दिर निर्माण के अलावा साहित्य सृजन एवं पुरातत्व के संरक्षण की योजनायें भी तीव्रता से गतिमान होगी। विद्वानों को विश्वास में लेकर उनको प्रेरणा देकर, अध्ययन/अनुसंधान के कामों में प्रवृत्त किये बिना हम संस्कृति का संरक्षण नहीं कर सकते हैं।

हमारी प्राचीन संस्कृति के संरक्षण, संवर्द्धन एवं जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने वाले मूलस्त्रोत निम्नांकित हैं : -

१) प्राचीन शिलालेख/मूर्तियों की पाद पीठों के लेख/मंदिरों की प्रशस्तियाँ।

२) प्राचीन पाण्डुलिपियाँ विशेषतः दक्षिण भारत में उपलब्ध 800-1000 वर्ष प्राचीन ताड़पत्रीय पाण्डुलिपियाँ।

मेरे एवं मेरे शुभचिन्तकों द्वारा 2017 में किये गये अनुरोध पर **परम पूज्य चर्याशिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज** ने अपने 3 सुशिक्षित शिष्यों को कन्नड़ भाषा सिखने हेतु कर्नाटक भेजा। वहाँ उन्होंने शताधिक दुर्लभ ताड़पत्रीय ग्रंथों की गाँव-गाँव में खोज की। फलतः अद्यतन अनुपलब्ध दर्जनों ग्रंथ एवं पूर्व प्रकाशित ग्रंथों के अस्पष्ट अंशों की व्याख्या हेतु प्राचीन प्रतियाँ मिल गई हैं। **पूज्य मुनि श्री आदित्यसागरजी, मुनि श्री अप्रमितसागरजी, मुनि श्री सहजसागरजी** तीनों प्राचीन कानड़ी लिपि (हड कन्नड़) को पढ़ने में समर्थ है। जैन दर्शन का तो उन्हें ज्ञान है ही फलतः हम उम्मीद करते हैं कि जैन संस्कृति का गौरव बढ़ाने वाले 2-3 ग्रंथ इस वर्षायोग में सूर्य का प्रकाश देख सकेंगे। जैन संस्कृति की यह महती सेवा होगी। इसकी धमक दूर तक एवं वर्षों सुनाई देगी।

पूज्य श्री के संघ में 4-5 युवा भी है जो स्वयं कम्प्यूटर के विशेषज्ञ हैं एवं अनुवाद तथा लिप्यांतरण कार्य में गुरुवर को अपना सहयोग दे रहे है। आज जब इन्दौर, आरा, भावनगर, दिल्ली आदि स्थानों के सक्षम केन्द्रों में पांडुलिपि संकलन, सूचीकरण एवं संरक्षण के काम को निरर्थक मानकर बंद कर दिया गया तब इस संघ से आशा की एक किरण आ रही है।

अ.भा. दि. जैन शास्त्रि परिषद ने विषय की गंभीरता को दृष्टिगत कर **संस्कृति संरक्षण मंच** का गठन किया है जिसके अन्तर्गत हम 6-7 वरिष्ठ विद्वान आगामी 12.08.22 को संस्कृति पर किये जाने वाले कुठाराघात को रोकने के उपायों को देखेंगे। साथ ही सम्बद्ध प्रकरणों के संकलन एवं भावी योजना बनाने पर विचार करेंगें।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज भी पूर्णायु के अन्तर्गत आयुर्वेद विषयक प्राचीन ग्रंथों का संकलन करा रहे है। हम उनको नमोस्तु निवेदित करते है, वर्षायोग में यदि आपको किसी ग्रंथ की जानकारी हो तो मुझे अवश्य सूचित करें।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

मेरी तीर्थ यात्रा

- डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर

सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के क्रम में कभी कभी ऐसे अनुकूल निमित्त बन जाते हैं कि अपनी महान संस्कृति के अवलोकन एवं पुण्यार्जन के अवसर भी मिल जाते हैं। इस जुलाई 2022 माह के शुरु में ही ऐसा सुखद संयोग बना जबकि अनेक लक्ष्य एक साथ सध गये।

शनिवार, 2 जुलाई की प्रातः 6 बजे मैंने पत्नी श्रीमती निशा जैन के साथ कार से नागपुर की यात्रा इन्दौर से प्रारम्भ की। हमारे साथ इन्दौर के धर्मनिष्ठ, शिक्षित सुश्रावक श्री सुमत प्रकाश जी जैन एवं भाभी जी श्रीमती सुधा जैन जी थी। एक और स्वाध्यायी सुश्राविका श्रीमती अनीता जैन भी साथ थी। फलतः हम पाँच ड्राइवर श्री राहुल के साथ इन्दौर नेमावर रोड़ पर बढ़ चले। बिजवाड़ के पहले हमने जलपान किया पश्चात जंगलों की प्राकृतिक सुषमा को निहारते कन्नौद, खातेगाँव, नेमावर, हरदा, टिमरनी होकर बैतूल के आगे पहुँचे। अब क्षुधा भी सताने लगी थी फलतः घर के शुद्ध भोज का आनन्द लेकर हम करीब 3.30 पर रामटेक पहुँच गये।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम से इस भूमि का संबंध जानकर मन रोमांचित हो उठा। विशाल मंदिर परिसर में भगवान शांतिनाथ की मूर्ति के दर्शन कर नयन तृप्त हुए। वहाँ बड़ी संख्या में पल्लीवाल जैन बन्धु भी उस दिन उपस्थित थे। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की प्रेरणा से बने लाल पाशाण के मंदिर की छवि निराली थी। मंदिर की विशालता एवं कलात्मकता तो मन मोहती ही थी अष्टधातु की विशाल खड़गासन प्रतिमायें दिगम्बरत्व का उद्घोष कर रही थी। पूज्य आचार्य श्री की दूरदर्शिता एवं प्रशस्त प्रेरणा को हमने नमन किया। 01 घंटे के सुखद प्रवास में सभी जिनमन्दिरों के दर्शन के बाद हमने कामठी के रास्ते नागपुर की ओर प्रस्थान किया।

नागपुर में तीर्थक्षेत्र कमेटी के कर्मठ एवं यशस्वी महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढ़ारी का निवास है। अतः हम उनके आतिथ्य से कैसे वंचित रहते? श्री पेंढ़ारी जी के आग्रह पर हम सब उनके निवास पर पहुँचे। वहाँ के गृह चैत्यालय के दर्शन कर गर्व की अनुभूति हुई साथ ही भरोसा कि उनके नेतृत्व में जैन तीर्थों का सम्यक् संरक्षण एवं विकास सुनिश्चित है। श्री पेंढ़ारी जी से हमने विभिन्न जैन तीर्थों पर चल रहे न्यायालयीन प्रकरणों, विकास कार्यों, भावी योजनाओं एवं जैन तीर्थ वन्दना के बारे में विस्तार से चर्चा की। हर विषय पर उनका स्पष्ट चिन्तन एवं सुनिश्चित कार्य दिशा है जो अनुकरणीय है। पेंढ़ारी दम्पत्ति ने हम सबका बहुमान किया। सायंकालीन भोजन के उपरान्त हम उनके द्वारा भेजे गये मार्गदर्शक बन्धु के सहयोग से सकुशल रात्रि में ओसवाल भवन, इतवारी आ गये। इसी भवन में अगले दिन (03.07.2022 को) पल्लीवाल जैन समाज के आगामी निर्वाचन से सम्बद्ध नामांकन पत्र प्रस्तुत करने की प्रक्रिया 03.07.22 को सम्पन्न कराई जो सकुशल सम्पन्न हुई। श्री अभय जी पनवेलकर, श्री शरद जी एवं उनकी पूरी टीम का आतिथ्य, सदाशयता एवं विनम्रता सदैव याद रहेगी। नागपुर से हमारी टीम में श्री राजीवरतन जैन भी जुड़ गये। अब हम 6 हो गये।

रात्रि में ही लगभग 8.00 बजे प्रस्थान कर हम लोग महाराष्ट्र के अमरावती जिले के प्रसिद्ध तीर्थ भातकुली पहुँचे। मध्य रात्रि में जब भातकुली पहुँचे तो चौराहे पर कोई बताने वाला नहीं थी किन्तु दिगंबर जैन तीर्थ निर्देशिका (इन्दौर) से क्षेत्र का फोन नं. लेकर जब सम्पर्क किया तो तत्परता से कर्मचारी ने पूरी जानकारी दी। श्री अभय जी पनवेलकर सा. (नागपुर) ने पूर्व से हम लोगों के विश्राम के लिए कक्ष आरक्षित करा रखे थे। अतः कोई असुविधा नहीं हुई। क्षेत्र पर आवास आदि की सम्यक, सुचारु व्यवस्था थी।

04.07.22 की प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर हम लोगों ने भगवान आदिनाथ की सातिशय मूर्ति के दर्शन किये। इतिहास जाना एवं जीवन को धन्य किया। जलपान आदि की भी क्षेत्र पर उत्तम व्यवस्था है। इस क्षेत्र पर मूर्ति प्रगट होने का इतिहास चांदनपुर श्री महावीर जी जैसा ही है। किन्तु प्रचार उतना नहीं है क्षेत्र अत्यन्त जागृत एवं दर्शनीय है मेरे इस क्षेत्र के प्रथम दर्शन थे। क्षेत्र के प्रबन्धक ने हमें पेंढारी परिवार के सहयोग से प्रकाशित भक्तामर स्तोत्र पर सुन्दर पुस्तक एवं क्षेत्र के इतिहास पर कुछ सामग्री दी।

04.07.22 को प्रातः लगभग 10 बजे हम लोगों ने भातकुली से मांगीतुंगी के लिए प्रस्थान किया। हमें जब यह ज्ञात हुआ कि संत शिरोमणि

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज कारंजा के समीप है एवं आज ही वे कारंजा पधारेंगे तो हमने मांगीतुंगी कारंजा होकर जाने का निश्चय किया। कारंजा के वैभव विशेषतः बलात्कारगण मंदिर एवं काष्ठा संघ की ख्याति पहले से सुन रखी थी अतः मन पुलकित हो रहा था। कारंजा के मार्ग में पूज्य आचार्य श्री के संघ मिला। काफी श्रावक-श्राविकायें उपस्थित थे। संघ एक निर्माणाधीन भवन (शायद वेयर हाउस) में ठहरा था आहार चर्या पूर्ण हो चुकी थी संघ सामायिक करने की तैयारी में था अतः दूर से भी भाव नमोस्तु कर संतोश किया, चर्चा का सुख नहीं मिला। पश्चात 7-8 किमी. चल कर हम महावीर चौक-कारंजा आये यहाँ बहन सौ. प्रतीक्षा पापलकर पूर्व से ही प्रतीक्षारत थी। उनके सहयोग से हमने बलात्कारगण मंदिर के दर्शन किये। रत्नमूर्तियों के दर्शन कर हमें अपने पूर्वजों की भक्ति पर गर्व हुआ किन्तु बलात्कारगण मंदिर के दुर्लभ ग्रंथालय एवं पाण्डुलिपि संग्रह में क्षेत्रीय कमेटी के विवादों के कारण ताला लगा होने के कारण दुःख हुआ। इस पाण्डुलिपि संग्रहालय में संग्रहीत पाण्डुलिपियाँ अत्यन्त मूल्यवान हैं। काष्ठा संघ के मंदिर एवं श्रीमती पापलकर के निवास पर चायपान के बाद हम महावीर ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल कारंजा पहुँचे। जहाँ आचार्य श्री के भव्य स्वागत की तैयारी की जा रही थी। श्रीमती पापलकर का जैन गणित के प्रति अनुराग एवं समर्पण श्लाघनीय है।

सायंकाल 4 बजे हमने सुखद एवं गौरवमयी स्मृतियों के साथ कारंजा से मांगीतुंगी के लिए प्रस्थान किया एवं गूगल मैप की सहायता से हम रात्रि 1.00 बजे के लगभग मांगीतुंगी पहुँचे। गूगल के माध्यम से ऐसे ऐसे रास्ते मिल जाते है जिनकी कोई चर्चा भी नहीं करता यानी वे पारम्परिक मार्ग नहीं है। **गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी** की प्रेरणा एवं कर्मयोगी स्वस्ति श्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी एवं उनकी पूरी टीम के समर्पण से 108 फीट ऊँची भगवान ऋषभदेव की मूर्ति का निर्माण तो हुआ ही है। ऋषभदेवपुरम् में आवासादि की उच्चस्तरीय व्यवस्था भी जगद्गुरु श्री रविन्द्रकिर्ती स्वामी जी ने जुटाई है। सर्वतोभद्र महल की छटा निराली है। रात्रि विश्राम के बाद हम प्रातः स्नानादि नित्यकर्मों से निवृत्त होकर विशेष वाहन से भगवान ऋषभदेव के पादमूल में पहुँचे। लिफ्ट से ऊपर तक जाने के बाद जब भगवान ऋषभदेव का हम सबने सपरिवार अभिषेक किया जो प्राप्त होने वाला सुख शब्दातीत रहा। बड़े-बड़े कलशों से भर-भर अभिषेक के बाद भी मन नहीं भर रहा था। आगरा के भाई श्री जितेन्द्र जैन भी सपरिवार वहाँ कलश हेतु उपस्थित थे। उनके पुत्र श्री श्रेयांस जैन ने भी अभिषेक किया। अभिषेक से पूर्व क्षेत्र के ट्रस्टी डॉ. जीवनप्रकाश जैन जी, अधिष्ठात इंजी. श्री सी.आर. पाटिल आदि ने हमारा सम्मान किया। यह सम्मान दायित्वों का स्मरण कराता रहा। पूज्य क्षुल्लक प्रशान्त सागर जी महाराज की मांगलिक उपस्थित भी उल्लेखनीय थी। मूर्ति पर अभिषेक के समय बादल भी अठखेलिया कर रहे थे। अनेकशः हम ऊपर एवं बादल नीचे। क्या सुहावना दृश्य था? यह अनुभव शब्दातीत है। अनेक पर्यटक स्थलों पर भी ऐसे दृश्य दुर्लभ होते हैं।

भोजनोपरान्त चिन्तामणि भ. पार्श्वनाथ के दर्शन किये। वहाँ आचार्य श्री तीर्थनन्दी जी महाराज ससंघ विराजमान थे। दर्शन कर हमने अपनी वापसी यात्रा 4.00 बजे प्रारम्भ की तथा रात्रि 10.30 बजे सकुशल इन्दौर आ गये। सुधी जनों के साथ की गई यह यात्रा अनेक अर्थों में विलक्षण थी। जहाँ रामटेक, भातकुली एवं कारंजा के प्रथम दर्शन हुए वही महाराष्ट्र के जीवन, संस्कृति को भी देखने का अवसर मिला। भगवान ऋषभदेव के विशाल मूर्ति तो युग-युग तक दिगम्बरत्व का उद्घोष करती रहेगी। पुनः पुनः ऐसी यात्राओं का अवसर मिले यही कामना है।

आचार्य श्री १०८ पुलकसागर जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करने पधारे मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे

महराष्ट्र के नए मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने औरंगाबाद में चातुर्मासरत आचार्य श्री १०८ पुलक सागर जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्य श्री ने उन्हें शास्त्र भेंट किया। क्षेत्र कमेटी द्वारा मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे एवं उनके साथ पधारे सभी अतिथियों का सम्मान किया गया।

अलौकिक व्यक्तित्व के धनी : आचार्य विमलसागर जी महाराज

- निर्मल जैन, सतना

पूज्य आचार्य विमलसागर में समाहित विविध गुणों के कारण उनके भक्तों की संख्या इतनी अधिक थी कि उसका अनुमान सहज ही नहीं किया जा सकता। किसी ने एक प्रभावक आचार्य होने के कारण उनकी वंदना की, किसी ने उनके लोक कल्याणकारी स्वरूप को मस्तक झुकाया, किसी ने उनकी आत्मा में प्रज्वलित ज्ञान ज्योति के कारण उनकी पूजा की, किसी ने संयम प्रदाता आचार्य के रूप में उनकी चरण वंदना करके अपना कल्याण किया, किसी ने तीर्थक्षेत्रों पर महत्वपूर्ण निर्माण कार्य की प्रेरणा देने के कारण आचार्य श्री का जयकार किया, किसी ने आर्ष परम्परा के प्रबल समर्थक और संरक्षक के रूप में उन्हें प्रणाम किया, किसी ने उत्कृष्ट ग्रन्थों के प्रकाशन के प्रेरक होने के कारण उनका गुणगान किया, किसी ने कठोर साधना और हजारों उपवास के कारण उत्कृष्ट तपस्वी के रूप में उनकी पूजा की और अनेकों ने उनके नेत्रों से सदा प्रवाहित होने वाली करुणा और वात्सल्य से प्रभावित होकर उनके चरण पकड़ लिए।

धर्म परायण जैन समाज ने तो सदैव ही पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज को पूर्ण श्रद्धा दी, परन्तु अन्य धर्मावलम्बी जनता भी आचार्य महाराज के दर्शन करते ही किस प्रकार उनकी भक्त बन जाती थी इसका सही आभास वह लोग आसानी से कर पाते थे जिन्हें गाँव-गाँव में आचार्य महाराज के पद विहार के दृश्य देखने का अवसर मिलता था।

मैंने देखा है कि किस प्रकार लोग उनके चरणस्पर्श करने और आशीर्वाद पाने के लिए लालायित रहते थे। छोटे-छोटे गाँव में जहाँ संघ को २-४ घंटे विश्राम करने योग्य जगह भी नजर नहीं आती थी, वहां लोगों ने स्वतः अपने मकान खाली कर दिए, चबूतरे लीप-पोत कर स्वच्छ कर दिए। बस प्रत्येक ग्रामवासियों की यही आकांक्षा रहती थी कि आचार्य महाराज के चरण गाँव में पड़ें। इसका एक कारण यह भी था कि छोटे-बड़े और जाति-पाति के भेद बिना प्रत्येक को आचार्य महाराज के चरणों तक जाने का, अपनी व्यथा कहने का और आशीर्वाद पाने का अवसर मिल जाता था।

उनकी करुणा भी सब पर बिना भेद-भाव के बरसती थी, कभी भी वे थकान के कारण खीझे नहीं, किसी को भी आशीर्वाद देने से मना नहीं किया। जंत्र-मंत्र के कारण उनकी आलोचना करने वाले यदि यह अनुमान कर सकें कि श्रद्धा से उनका आशीर्वाद पाकर और णमोकार मंत्र के प्रभाव से कितनों ने अपने कष्ट से छुटकारा पाया और जैन धर्म की कितनी प्रभावना इससे हुई तो सहज ही उनकी भ्रांति दूर हो जाएगी।

फिर उनकी करुणा केवल मनुष्यों पर बरसती हो ऐसा भी नहीं हा, वे तो प्राणी मात्र के प्रति दयालु थे। किसी का दुःख देखकर ही नहीं सुनकर भी वे करुणाद्र हो जाते और दुःख दूर करने का उपाय सोचने लगते। शायद किसी ऐसे ही करुणावंत संत को देखकर महाकवि तुलसीदासजी ने संत हृदय की सटीक व्याख्या की होगी –

संत हृदय नवनीत समाना, कहा कविन्ह पै कह नहिं जाना।
निज परिताप द्रवई नवनीता, पर दुःख द्रवई सौ संत पुनीता।

संत के हृदय को मक्खन की तरह कोमल कहना पर्याप्त नहीं है क्योंकि मख्खन तो अपनी गरमी से द्रवित होता है जबकि संत का हृदय दुसरे का दुःख देखकर द्रवित ही जाता है।

मार्च ९२ में जब आचार्यश्री के संघ ने सम्मेदशिखर जी की ओर जाते समय उस गुनौर नगर में प्रवेश किया जिस गुनौर, पन्ना नगर में उनका मुनि अवस्था का प्रथम चातुर्मास संपन्न हुआ था, तब मुझे गुनौर वासियों की अनुपम भक्ति तो देखने मिली ही, चालीस वर्ष पूर्व के कुछ संस्मरण भी सुनने को मिले। वहां के वृद्ध ग्रामवासियों ने बताया कि पहले हमारे ग्राम में विजयादशमी को भैंसे की बलि दी जाती थी और उसे पूरे ग्राम का उत्सव माना जाता था। जैन समाज भले ही उसमें प्रत्यक्ष सम्मलित नहीं होती थी परन्तु समारोह के लिए चंदा तो उन्हें भी देना पड़ता था। सन १९५३ में जब बाबा ने यहाँ चातुर्मास किया और विजयादशमी की तैयारियां होने लगीं तब बलि की जानकारी मिलने पर बाबा ने आहार पानी का त्याग कर दिया। उन्होंने कहा कि जब प्रत्येक ग्रामवासी इस प्रथा को हमेशा के लिए बंद करने का निर्णय नहीं करते तब तक मैं आहार ग्रहण नहीं करूँगा। उनके इस त्याग के कारण ग्राम वासियों को झुकना पड़ा और बलि प्रथा बंद हो गयी। संस्मरण तो वहां और भी बहुत मिले। गुनौर की जनता तो कहती थी कि हमें मीठा पानी बाबा की कृपा से ही मिलना प्रारम्भ हुआ था, वहां जो स्कूल चल रहा है वह भी बाबा की प्रेरणा

से प्रारम्भ हुआ था।

कलुआ पहाड़, गया की तरफ की एक घटना भी प्राणीमात्र पर करुणा के लिए उल्लेखनीय है, आचार्यश्री जब उस तीर्थ स्थली पर पहुंचे तो ज्ञात हुआ कि वहां रामनवमी के दिन बकरे की बलि दी जाती है और वह बकरा भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ती के फण पर से काटा जाता है। आचार्य महाराज ने ग्राम के पंचों को बुलाकर हिंसा से होनेवाले पाप और भगवान राम के अहिंसा प्रेम को समझाया तथा विश्वास दिलाया कि बलि बंद करने से किसी का अकल्याण नहीं होगा वरन आनंद ही होगा तो विचार करके पंचो ने बलि बंद करने का निर्णय किया। देश के विभिन्न भागों में विशेषकर बिहार और बंगाल में विहार करते समय आचार्य महाराज ने अनेक लोगों को पशुहत्या और मांसाहार से विरत कराया।

अपनी शाकाहार प्रचार प्रवृत्ति के कारण मैंने आचार्य महाराज के करुणा वात्सल्य स्वरूप का विशेष उल्लेख यहाँ कर दिया है परन्तु आचार्य महाराज में तो अनेक गुण थे और वे भी ऐसे कि एक-एक गुण की चर्चा के लिए स्वतंत्र लेख लिखना पड़े।

उनका संयम प्रदाता आचार्य का स्वरूप देखें तो उन्होंने शताधिक श्रावक –श्राविकाओं के हाथों में पिच्छी कमंडलु देकर उनको कल्याण के मार्ग पर लगा दिया और सहस्त्राधिकों को व्रत नियम देकर उनकी जीवनधारा बदल दी। उनका ज्ञानाराधक स्वरूप देखें तो अपनी पचहत्तरवीं वर्षगाँठ पर उन्होंने ७५ आर्ष ग्रंथों के प्रकाशन तथा ७५ विद्वानों के सम्मान की प्रेरणा दी जिसे उनके समर्पित भक्तगणों ने पूज्य उपाध्याय भरतसागरजी महाराज एवं पूज्य आर्यिका स्याद्वादमती माताजी के मार्गदर्शन में दो वर्ष में ही पूर्ण कर दिया।

आचार्य महाराज ने अपने चिंतन के माध्यम से जैनागम को किस प्रकार हृदयस्थ कर लिया था यह उनके संक्षिप्त प्रवचनों से सहज ही प्रतिभासित हो जाता था। वे कम बोलते थे परन्तु ऐसा बोलते थे कि हृदय को छू जाता था, सुनने वाले कुछ सोचने को मजबूर हो जाते थे। महाराजश्री के चिंतन के विन्दु उनकी डायरी के पन्नो पर भी अंकित हैं, जो बहुमूल्य हैं। कुछ पन्नों के चित्र वात्सल्य रत्नाकर ग्रन्थ के प्रथम खंड में समाहित किये गये हैं।

प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार और महत्पूर्ण स्थानों पर नवीन निर्माण की प्रेरणा भी आचार्य महाराज अपने विहार के समय बराबर देते रहे। उनकी दीक्षास्थली सोनागिरी सिद्धक्षेत्र पर स्थापित स्याद्वाद विमल ज्ञानपीठ सभा भवन, श्रुतस्कंध, प्रतिमाएं, चौबीसी यंत्र आदि उनकी कल्पना और प्रेरणा का ही परिणाम है। आचार्य महाराज के अनेक समृद्ध भक्त अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग उनकी प्रेरणा से होने वाले निर्माण कार्यों में करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे, इसी कारण तीर्थराज सम्मेदशिखरजी पर समवशरण मंदिर जैसे उत्कृष्ट एवं भव्य रचना का निर्माण सम्भव हो सका। अभी भी तीर्थराज पर तीस चौबीसी का निर्माण कार्य चल रहा था। तीर्थक्षेत्र राजगृही एवं श्रवणबेलगोला में जनोपयोगी सरस्वती भवनों का निर्माण भी उनकी ही प्रेरणा से हुआ है। अनेक जगह जिनबिम्ब स्थापित हुए, पाठशालाएं खुलीं, पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठायें व वेदी प्रतिष्ठायें भी उनकी प्रेरणा और सानिध्य से अनेक जगह संपन्न हुई।

आचार्य महाराज का तपस्वी स्वरूप भी अद्भूत था। उन्होंने अपने इकतालीस वर्षीय मुनिचर्या के बीच विभिन्न व्रतों के माध्यम से ३२६६

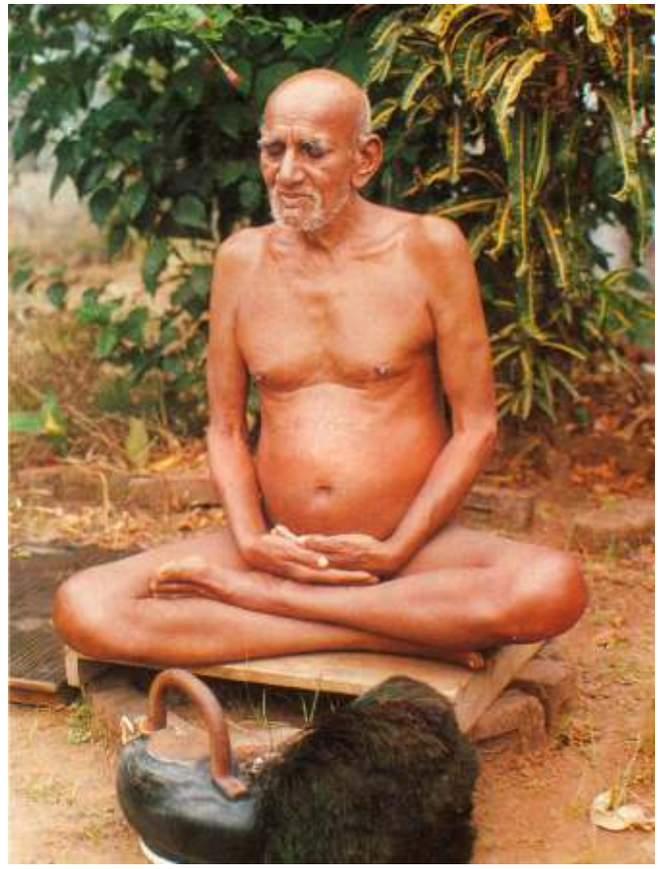

उपवास किये। पूरे चातुर्मास भर वे एक दिन के अंतर से ही आहार को उठते थे और अन्य रहित आहार ग्रहण करते थे। घी, नमक, दही, गुड, अन्न, तेल का त्याग भी उनका बहुत समय से था। दैनिक चर्या में उनका अधिक समय जाप और ध्यान में ही जाता था। अत्यंत अल्प निद्रा लेकर वे रात्रि के शेष समय में भी जाप ध्यान ही किया करते थे।

आचार्य विमलसागर जी एक अत्यंत प्रभावक आचार्य के रूप में जाने जाते थे। प्रायः पूरे देश में विहार करते रहने के कारण उनके द्वारा जैन धर्म की महती प्रभावना हुई। मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, गुजरात, दिल्ली महाराष्ट्र और कर्नाटक प्रान्तों को तो उनके चातुर्मासों का लाभ भी मिला। इन्हीं प्रभावनाओं के कारण आचार्य महाराज को तीर्थद्वारक, घारित्र चक्रवर्ती, अतिशय योगी, तन्मार्ग दिवाकर, निमित्त ज्ञानभूषण, करुणानिधि, वात्सल्यमूर्ति आदि पदवियों से विभूषित किया गया।

इस प्रकार आचार्य विमलसागरजी अनेक गुणों के समूह थे, महासभा अध्यक्ष निर्मलकुमार सेठी ने ठीक ही कहा है कि वे स्वयं में एक संस्था से ऐसे अलौकिक व्यक्तिगत के धनी आचार्य महाराज की स्मृति हमारे हृदय से कभी जा नहीं सकती। हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उस अलौकिक संत की सचित्र स्मृतियाँ अत्यंतप्रभावक ढंग से "वात्सल्य रत्नाकर" ग्रन्थ में संजोकर रख दी गयी हैं। ग्रन्थ प्रशंसकों का उपकार भी कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

सच्चे गुरुओं का स्वरूप

- बा.ब्र. प्रकाशचन्द्र जैन, अवागढ़

सर्व धर्मों में गुरुओं को माना है, ऐसा कोई धर्म नहीं जिस में गुरु का स्थान न हो, वर्तमान में सच्चे गुरु बहुत ही कम मिलेंगे, जैन धर्म में तीन लिंग पूज्य हैं। दर्शन पाहुड में कहा है-

संग जिणस्य रूपं विदयं उक्किह सावयाणंत।
अवर हियाण तादीयं, चउत्थम् पुण लिगदंसधं णात्थि ।।

एक तो जिन स्वरूप निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि लिंग, दूसरा उत्कृष्ट श्रावकों का रूप अर्थात ऐलक, क्षुल्लक का पद और तीसरा आर्यिकाओं का रूप ऐसे तीन लिंग-वेष तो श्रद्धा करने योग्य हैं – पूज्य हैं। चौथा लिंग सम्यग्दर्शन नहीं है। इसका आशय यह है कि इन तीन लिंगो के अतिरिक्त अन्य किसी लिंग को गुरु मानता है वह सम्यक श्रद्धानी नहीं, वह तो मिथ्यादृष्टि है। देव शास्त्र गुरु पूजा में द्यानतराय जी ने बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है –

प्रथम देव अरिहंत सुश्रुत सिद्धांत जू,
गुरु निर्ग्रन्थ महंत मुकतिपुर पन्थ जू।
तीन रतन जगमांहि सो ये नर ध्याइये,
तिन की भक्ति प्रसाद परम पद पाइए ।।
पूजों पद अरिहंत के, पूजों गुरु पद सार।
पूजों वाणी सरस्वती नित प्रति अष्ट प्रकार ।।

सर्वप्रथम जिनके चार घातिया कर्म नष्ट हो गये हैं ऐसे अरहंत भगवान वीतराग सर्वज्ञ और हितोपदेशी भगवान द्वारा प्रणीत सम्पूर्ण जिनागम एवं निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरु पूज्य हैं और मोक्ष रुपी नगर के मार्ग को प्रकाशित करने वाले हैं। संसार में देव शास्त्र गुरु ही श्रेष्ठ रत्न हैं। हे भव्यजन! इनकी पूजा भक्ति करो और ध्यान करने से उत्कृष्ट पद अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होती है। मैं देव निर्ग्रन्थ गुरुओं के चरण एवं जिनवाणी की वंदना भक्ति करता हूँ।

मेरी भावना में पं. जुगलकिशोर "मुख़्तार" जी ने सच्चे गुरुओं का स्वरूप बताया है-

विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज पर के साधन में जो, निश दिन तत्पर रहते हैं ।।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे प्राणी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ।।

जिन्होंने पांच इन्द्रियों के विषय सुख की इच्छा को त्याग दिया है और साम्य भाव, समता भाव शुद्ध उपयोग रुपी आत्मिक धन का ही संग्रह किया है, अपने तथा पर के आत्म कल्याण के साधन में जो रात-दिन तत्पर रहते हैं, इन्द्रिय विषय आदि संसारिक सुख रूप स्वार्थ का त्याग करने से संसारिक भोगों की इच्छा मात्र का त्याग कर देने से और आत्मिक आनंद के आस्वाद के कारण आह्लाद होने से जो खेद रहित होकर सच्ची दुष्कर तपस्या कर रहे ऐसे आत्मज्ञानी, आत्मानुभवी, तत्वदर्शी त्यागी महात्मा जगत के सत्य मार्ग दर्शक बनकर मोक्षार्थी जीवों के सर्व दुःख समूह का हरण करते हैं।

गुरु कैसे होते हैं ?

जो पंच इन्द्रियों के विषय भोगों की लालसा से दूर हों, आरम्भ नहीं करते हो, समस्त परिग्रह से दूर हों एवं सदा जो ज्ञान, ध्यान और तप में तल्लीन हों उन्हें गुरु कहते हैं। साधु, मुनि, तपस्वी, ऋषि, योगी आदि दिगम्बर गुरु के ही नाम हैं। अपने शिक्षक तो विद्यागुरु और आचार्य उपाध्याय ही गुरु है। एक कवि ने अपने भजन में कहा है-

जे परम दिगम्बर वनवासी गुरु रत्नत्रय के धारी हैं।
आरम्भ परिग्रह के त्यागी जो निज चैतन्य विहारी है ।।

णमोकार मंत्र में अंतिम पद- णमोलोए सव्वसाहूणम् लोक के सभी साधु को नमस्कार हो इसका अर्थ जगत में जो सम्पूर्ण परिग्रह का त्याग करके केवल संयमोपकरण- पिच्छी, शोचोपकरण-कमंडल, और ज्ञानोपकरण ग्रहण करने वाले निर्ग्रन्थ मुनि हैं उनको और सफ़ेद पीले वस्त्र पहनने वाले अथवा नग्न रहकर भी मठ मंदिर, क्षेत्र आश्रम आदि का तथा हाथी घोड़ा आदि चेतन अथवा मोटर पालकी आदि अचेतन वाहनों का स्वामित्व रखने वाले, नैपकीन, मोबाइल, कंप्यूटर आदि गृहस्थों के योग्य परिग्रह का स्वीकार करने वाले साधु इन सब को नमस्कार करना भी विनय मिथ्यात्व ही है। क्योंकि णमोलोए सव्वसाहूणम् से लोक में विराजित उन समस्त मुनियों को नमस्कार किया गया है जो आरम्भ और उपरोक्त तीन उपकरणों के अलावा समस्त परिग्रह के त्यागी हैं और आत्मकल्याण के लिए ज्ञान, ध्यान, तप आदि की साधना में लीन रहते हैं। यथार्थ मुमुक्षु के गुरु तो ऐसे मुनिराज ही होते हैं। हाँ संसारेच्छु जरूर अपने समान ही सब क्रिया करने वाले को गुरु मानता है।

एक लोक कहावत है – **वह गृहस्थ कौड़ी का भी नहीं जिस के पास कौड़ी भी नहीं, और जिस साधु के पास कौड़ी भी है वह कौड़ी का भी नहीं।**

आचार्य श्री समंतभद्र स्वामी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में सच्चे गुरुओं के स्वरूप के लिए कहा है –

विषयाशा-वेशातिन्तो, निरारम्भो अपरग्रिहः।
ज्ञान धन तपोरक्तः तपस्वी प्रशस्त्ये ।।
विषय छोड़कर निरारम्भ हों, नही परिग्रह रक्खे पास।
ज्ञान ध्यान तप में रत होकर, सब प्रकार की छोड़ें आस ।।
ऐसे ज्ञान ध्यान तप-भूषित, होते जो सच्चे मुनिवर।
वही सुगुरु हैं वही सुगुरु हैं वही सुगुरु हैं उज्जवलतर ।।

एक कवि ने बहुत सुन्दर कहा है –

फिर भी कहते हम फ़कीर हैं

हमारे यहाँ संत को फ़कीर भी कहते हैं। जो फिर का फांका करें वह फ़कीर जो फ़िक्र से बेफिक्र हो गया वही फ़कीर। आज वे फ़कीर कहाँ रहे ? आज की फ़कीर जमात सामाजिक व्यवस्थाओं की ट्रस्टों की, आश्रमों की रूढ़िगत परम्पराओं की अन्य संचालित गतिविधियों की अपने शिष्य की चिंता में

भगवान महावीर का २५५० वाँ निर्वाणोत्सव व हमारे कर्तव्य

- मुनि श्री सुश्रुत सागर
(आचार्य श्री सुनील सागर जी के शिष्य)

भगवान महावीर स्वामी अलौकिक, अद्वितीय, आध्यात्मिक महापुरूष थे, जो लोकोत्तर श्रमण साधना से लोक में जैन धर्म के प्रतिष्ठापक कहे जाते हैं। पर इन्हीं के पूर्व इस सनातन दिगम्बर परम्परा को प्रवाहित करने वाले प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) से लेकर तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ तक २३ तीर्थंकर हो चुके हैं।

भगवान महावीर के पिता सिद्धार्थ और माता त्रिशला जिन्हें प्रियकारिणी भी कहा जाता थी। पुत्र के गर्भ में आने के समय से ही राज्य में धन-धान्य की वृद्धि होने लगी इसीलिए पिता ने वर्द्धमान नाम रखा। युगल ऋद्धिधारी मुनियों के मन की शंका का समाधान दूर से ही देखकर हो गया उस कारण सन्मति नाम रखा।

सर्प के साथ निर्भय होकर क्रीड़ा की अतः वीर कहलाये, मदोन्मत्त हाथी को चुटकियों में वश में किया तो महावीर कहलायें। अतिवीर रूद्र का उपसर्ग जीतने से हुए।

प्रभु महावीर को लोकतंत्र और गणतांत्रिक सोच के संस्कार माता-पिता से विरासत में मिले। न्याय-नीति से राज्य का संचालन होता था। सदस्यों को विनय का पालन करना पड़ता था। अनावश्यक बातचीत का निषेध रहता था। दो प्रमुख संघ थे वज्जि और मल्ल। लिच्छवि ज्ञात विदेह आदि आठ सदस्य गणराज्यों के कारण वज्जिसंघ एक ताकतवर संघ था। उसकी राजधानी वैशाली थी और समकालीन सत्ता उसका लोहा मानती थी। मगध जैसा शक्तिशाली राजतंत्र भी उसके सदस्यों से दोस्ती और रिश्ता करने में अपनी कुशल समझता था। इस प्रकार सबकी स्वतंत्रता सबकी बराबरी सौहार्द्रता, वंशवाद का निषेध, अभिव्यक्ति की आजादी, वाद और विमर्श, निर्णय प्रकिया की समूची पारदर्शिता, अहस्तक्षेप क्षेत्राधिकार का पारस्परिक सम्मान सह अस्तित्व की भावना आदि मानवीय व्यवहार की तमाम अच्छाइयों को महावीर ने न केवल गणराज्य के सीमित दायरे में बल्कि वज्जिसंघ के अपेक्षाकृत बड़ें दायरे में भी घटित होते देखा था।

प्रभु महावीर का जीवन अत्यन्त गंभीर, धैर्यता, सहजता, सरल, सादगी, पूर्ण सदाचार से सधा हुआ था। तटस्थ पूर्ण शांत सहिष्णु से भरे हुए थे। पिछले जन्मों का स्मरण-जातिस्मरण होने से संसार की असारता का बोध होने पर युवावस्था में ही तीस वर्ष की अल्पवय में सन्यास के मार्ग पद अनेक गणराज्यों की राजसत्ता को ठुकराकर वन का मार्ग अपनाया और दीक्षा ग्रहण की और बारह वर्ष तक पूर्ण दिगम्बर रूप में मौन रह वन-उपवन-नगरों में विचरण करते हुए घोर-उपसर्ग-परीषहों को सहते हुए आत्मा की शुद्धि करते रहे। ज्रिभंका गांव के समीप ऋजुकुला नदी निकट शालवृक्ष के नीचे कैवल्यज्ञान अर्थात सर्वज्ञता को प्राप्त हुए। तीस वर्ष तक अनवरत रूप से सात तत्व-नौपदार्थ-षट्द्रव्य-पंचास्तिकाय का मंगलकारी धर्मोपदेश दिया। अपने तत्व बोध के बल पर वर्तमानकालीन हिंसक यक्षों का बहिष्कार किया।

मिथ्या कुरीतियों को नष्ट किया, स्त्री अत्याचार को रोका, एकांतमतो का जबरदस्त खंडन किया, स्याद्वाद-अनेकांत-सप्तभंगी की स्थापना कर जन-जन के हृदय में सम्यक के बीज बोये । अहिंसा-सत्य-अचौर्य-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहता इन पंचशील को स्थापित कर जगत के जीवों को परम-मैत्री और सुशीलता से रहने के लिए प्रेरित किया। "जीओ और जीने दो" का सूत्र देकर जीवमात्र की रक्षा, पूर्ण स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया जातिवाद के भेदभावों को खत्मकर भेद विज्ञान की कला सिखायी। सम्पूर्ण मार्गदर्शन, देशना देकर कार्तिक कृष्ण अमावस्या के प्रत्यूष वेला में सर्व कर्मों का नाश कर पावापुर के पद्दा सरोवर से मोक्ष सिधारे।

भगवान महावीर की अहिंसा सर्वविश्व में सौहार्द शांति और अपनत्व को जन्म दे सकती हैं। हिंसा दुःख अशांति और रोगों की जड़ है, धन-सम्पत्ति वैभव को नष्ट करता हैं। मोहनदास कर्मचन्द गांधी ने महावीर स्वामी के पंचसूत्रों बल पर ही देश को आजादी दिलायी।

पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम से लखनऊ के इंडस्ट्रीयूट में छात्रों द्वारा प्रश्न किये जाने पर उन्होनें जबाब दिया था, कि भगवान महावीर की अहिंसा मिसाइल से ही सारे विश्व में शांति आ सकती है। अन्य उपाय नहीं हैं।

भगवान महावीर हमारे परम पिता है जिनने हमें परपार्थ मोक्ष का मार्ग दिखाया और संसार में रहकर कैसे बैठे? केसे बोले? केसे चले? कैसे खाये? कैसे रहे? आदि बातों को सम्यक्प्रकार बताई-सिखाई, सम्प्रति उनका २५५० वाँ निर्वाण कल्याणक महोत्सव हमारे समक्ष आया हैं। हम सभी मिलकर उनके इस महोत्सव को एक साथ एक सूत्र में बंधकर सारे देश में २५४९ कार्तिक कृष्ण १५ तदनुसार २४.१०.२२ से कार्तिक कृष्ण १५ २५५० तदनुसार दीपावली २३ तक धूम-धाम से भक्ति आराधना सहित मनायें, जिससे हमारा आत्मीक विकास, सुख-आनन्द-शांति और वात्सल्य प्रेम के द्वार खुलेंगे।

भगवान महावीर स्वामी सैद्धांतिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक आत्मशोधक लोक पुरुष थे। जिन्होंने अपनी ज्ञान की गंगा की अमृत धारा से देश-विदेश की प्रत्येक संस्कृति को संस्कृत होने के लिए उत्साहित किया हैं, जिनके मंगलकारी सूत्र हर व्यक्ति को चिंतन के लिए जागृत करते हैं। सुषुप्त चेतनाओं को जगाने के लिए आलर्म का कार्य करते हैं। व्यसनों के गर्त में गिरती पीड़ी को जे. सी. बी. सहारे का कार्य करते हैं। जिनके जीवन का प्रत्येक पहलू हमें सम्यक्पथ की ओर अग्रसर करता हैं।

उन प्रभु का २५५० वाँ निर्वाण महोत्सव पूरे वर्ष भर (२०२२ से २०२३) मनाने का अभूतपूर्व अवसर आया हैं, इस मौके को आगे न टालते हुए, हम अपने जीवन का सौमाग्य समझकर आज से ही प्रभु महावीर और उनके मूलभूत सिद्धांत सूत्र हैं, जो लोक कल्याणकारी है उनको धर्म प्रभावना की

मसरूफ हैं। आत्मा की मस्ती तो है नहीं फ़िक्र के धागे बंधे हैं। फ़कीर तो वह है जो स्वयं में रत है और अपनी मस्ती में आनंदित।

कवि भूधरदास उन निर्ग्रन्थ अपरिग्रह मुनियों के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करते हुए कहते हैं।

वे गुरु उर बसों, जो भव जलधि जिहाज।
आन तिरे और तारहिं, ऐसे श्री ऋषिराज ।।

परन्तु वर्तमान परिस्थिति में कोई भी विवेकी मनुष्य यही कहेगा –

ऐसे गुरु मेरे मन बसों, जो भव जलधि में उपल जिहाज।
आप डूबें, सभी को डुबायें, ऐसे मूढ़ सग्रंथ ऋषिराज ।।
मोह को महाशत्रु जानकर, छोड़ा था सब संग-घरबार।
परिग्रह रखते हुए बो ही अब काह भूले वह विचार ।।

उनकी इस दुखस्था का यथार्थ चित्रण करते हुए श्रुतपंचमी पूजा की जयमाला में आचार्य गुप्तिनंदी कहते हैं –

कुछ वस्त्र छोड़ निर्ग्रन्थ बने, निर्ग्रन्थ स्वरूप न पहिचाना।
इससे आगे न निकल सके, समता सुख क्या है न जाना ।।

दिगम्बर मुनि का वेष सब परिग्रह से रहित होता है। देव, शास्त्र, गुरु के सच्चे भक्त बनों अंध भक्ति एवं बगुला भक्ति से काम नहीं चलेगा। निर्ग्रन्थ साधुओं के रत्नत्रय का पालन कराने में सहयोग करके अपना पुण्य संचय करें।

हे निर्मल देव तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान दीप आगम प्रणाम।
हे शांति त्याग के मूर्तिमान, शिवपथ-पंथी गुरु तुम्हें प्रणाम ।।

भरोसा करना है तो गुरू और प्रभु पर कीजिए..वरना लोगों पर करके तो जीने की उम्मीद ही कम हो जाती है - आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी महाराज

गुरू एक उपस्थिति है, सान्निध्य है, सामीप्य है, अवसर है। वह किसको कब उपलब्ध हो जाए कुछ कह नहीं सकते। लेकिन आज के वातावरण में हम सब मौल, माहौल और बाजार से प्रभावित लोग हैं। हर चीज वारंटी और गारंटी से खरीदते हैं। गुरू भी ऐसे ही बनाते हैं। सोमवार को गुरू बनाया, मंगलवार को खोट निकाली, बुधवार को छोड़ दिया और गुरूवार को फिर नये गुरू की तलाश शुरू हो जाती है। ज़िन्दगी भर यही चलता रहता है और गुरू नहीं मिल पाते हमारे अपने ही कारण। जीवन में गुरू का उतना ही महत्व है जितना शरीर में स्वांस का, घर-परिवार, रिश्तों में विश्वास का।

एक सन्त बीमारियों से जूझ रहे थे, कहीं भी वो औषधि नहीं मिल रही थी जिससे गुरू ठीक हो जाए। सन्त किसी गाँव से गुजर रहे थे, शिष्यों ने गाँव वालों से पूछा- यह जड़ी बूटी कहां मिलेगी-? गाँव वालों ने कहा - अरे जड़ी बूटी तो हमारे गाँव के कुआ में लगी है। शिष्य, गुरू और गाँव वाले कुआ के पास गये। गाँव वालों ने कहा वो देखो जो कुआ के अन्दर किनारे पर लगी है, ये वही औषधि है। शिष्य ने आव देखा ना ताव कुआ में कूद गया। शिष्य जब औषधि लेकर कुआ से बाहर आया, गुरू ने पूछा - तुमको मौत का भय नहीं लगा-? शिष्य ने बहुत गहरी बात कही - गुरूदेव जिसकी डोर गुरू के हाथ में हो फिर उसे मौत का क्या डर। बात गहरी और समझने जैसी है। गुरू हमारे बुझे हुये दीप को जलाने की प्रेरणा देते हैं, गुरू अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का संकेत देते हैं, गुरू पाप के तिमिर को हटाकर, पुण्य के प्रकाश में जाने की दिशा बोध देते हैं। गुरू समझा सकते हैं, बता सकते हैं, मार्ग दिखा सकते हैं लेकिन समझना, जानना और चलना तो स्वयं को पड़ेगा। हम समझते हैं कि गुरू हमारे साथ चलेंगे, सब काम निपटा देंगे, बेटा-बेटी की शादी भी करवा देंगे, व्यापार भी सेट करा देंगे और अपने भक्त से लोन भी दिला देंगे। तो ऐसा भी नहीं है बाबू! सच तो यह है कि - हम गुरू पर आश्रित हो जाते हैं। उनके भरोसे जीना शुरू कर देते हैं। गुरू पर आश्रित नहीं बल्कि गुरू से संचालित होना चाहिए। हम भूल जाते हैं तो गुरू हमें याद दिलाते हैं - तुम बीज हो - वृक्ष बन सकते हो। बून्द हो - सागर बन सकते हो,

श्रेष्ठ हो - सर्वश्रेष्ठ बन सकते हो। अपनी हर भूल को, गलती को, पाप और अपराध के बोध के लिए गुरू से जुड़े रहिये। भटकना, भुल करना, गलती, पाप और अपराध करना हमारा स्वभाव है। सही मार्ग पर लाना, सही मार्ग पर दर्शन देना, अपराध बोध कराना गुरू का फर्ज है। अपनी गलती को सुधारने के लिए गुरू का चयन करो, ना कि गुरू को सताने के लिये, ना उन पर बोझ बनने के लिये।

क्योंकि जीने के लिये खुद की समझदारी ही अहमियत रखती है अन्यथा अर्जुन और दुर्योधन के प्रभु और गुरू एक ही थे।

साधना महोदधि अंतर्मना आचार्य 108 श्री प्रसन्न सागर जी महाराज पारसनाथ मे स्वर्णमय स्वर्ण भद्र कूट टोंक पर विराजमान हैं एवं सौम्यमूर्ति श्री 108 पीयूष सागर जी महाराज ससंघ बीसपंथी कोठी पारसनाथ में विराजमान हैं।

ध्वजा में फहराकर सर्व जगत को सुख शांति की राह दिखायें।

- हमारे निभाने योग्य कर्तव्य-

1. जहां-जहां भगवान महावीर स्वामी के मंदिर वहां पर पांचों कल्याणकों की पांचों तिथियों सांस्कृतिक आयोजन, भाषण, प्रभु की देन, रैलियाँ, विभिन्न देशों की वेशभूषा में नाट्य मंचन।
2. महावीर प्रभु संबंधित तीर्थों व मंदिरों का जीर्णोद्धार।
3. स्मारक, उद्यान, सर्कल, चौराहे, सड़को के नामांकरण महावीर स्वामी के नाम से।
4. उद्घाटन और समापन समारोह में प्रधानमंत्री, प्रत्येक प्रदेश के मुख्यमंत्री व नेताओं के द्वारा भाषण।
5. विश्वविद्यालय, विद्यालय, संस्थाओं जो महावीर के नाम से संचालित है वहां पांचों कल्याणक तिथियों पर आयोजन, भाषण, प्रतियोगिता।
6. जीवदया के कार्य /नये गौ-शाला, जीवरक्षा, केन्द्रों का निर्माण व संचालकों का सम्मेलन।
7. प्रभावशाली साधु-संतो की कान्फेंस वार्ता- पत्र व्यवहार हो।
8. अप्रकाशित ग्रंथो का प्रकाशन, प्राचीन ग्रंथालयों की देखरेख, व्यवस्था एवं उनका इतिहास-विवरण तैयार करना।
9. वर्तमान में जैन नेता, अधिकारियों से वार्ता, सम्मेलन।
10. जैनों की जन गणना।
11. जैन समाज के श्रावकों द्वारा संचालित चैनलों के प्रमुख से वार्ता, सम्मेलन।
12. पत्र-पत्रिकाओं में सूचना, आलेख, सम्पादकों का सम्मेलन एवं वार्ता
13. संचालित पाठशाला में महावीर स्वामी के चरित्र का वाचन-चर्चा, प्रश्नोत्तर, विद्वत्गोष्टियां, शिविर। प्रत्येक जिनालय के साथ पाठशाला की शुरूआत।
14. आर्थिक रूप से पिछडे हुए साधर्मियों का सहयोग।

आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी ने वीरशासन जयंती पर सभी धर्मप्रेमियों से भगवान महावीर का २५५० निर्वाणोत्सव वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का आह्वान किया हैं।

"जय महावीर"

अनूठी, पठनीय कृति है समण सुत्तं-समख्यातिसंस्कृतटीकोपेतम्

प्रो . श्रीयांश कुमार जी सिंघई जयपुर ने समणसुत्तं पर संस्कृत में समख्याति टीका लिखी

- डॉ.सुनील जैन संचय "ललितपुर"

'समणसुत्तं' नामक ग्रंथ प्राकृत साहित्य की वह महत्तम बानगी है, जिसमें सर्वोत्कृष्ट मानवीय मूल्य के रूप में दुःख विमुक्ति अर्थात सुखोपलब्धि के लिए सार्थक-सटीक उपदेश उपलब्ध है।

समणसुत्तं इस अपूर्व ग्रंथ को किसी ने लिखा नहीं है तथापि इसमें ऋषियों-महर्षियों के उपदेश संकलित होकर जिस असरकारक एवं व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत हुए हैं, उससे ग्रंथ की गरिमा प्रामाणिक परिधि में अपार हो गयी है।

'समणसुत्तं' नामक इस महत्वपूर्ण ग्रथं पर केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर में जैनदर्शन विभाग में आचार्य एवं संकाय प्रमुख, संस्कृत-प्राकृत भाषा के वरिष्ठ मनीषी आदरणीय प्रो. श्रीयांश कुमार जी सिंघई जयपुर ने 'समख्यातिसंस्कृतटीकोपेतम्' टीका लिखकर बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है। ४९६ पृष्ठों में समाहित 'समणसुत्तं' समख्यातिसंस्कृतटीकोपेतम् इस महत्वपूर्ण कृति का विगत दिनों लोकार्पण प्रो. श्री निवास जी बरखेड़ी कुलपति केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली ने प्रो.गयाचरण जी त्रिपाठी, श्री सुरेश जी सोनी जी, प्रो.बैद्यनाथ लाभ जी कुलपति नालन्दा बिहार विश्वविद्यालय नालंदा, प्रो.एस. पी. शर्मा जी एवं प्रो. जितेन्द्र भाई शाह जी के साथ किया।

पिछले दिनों कृति के संस्कृत टीकाकार आदरणीय प्रो. श्रीयांश

कुमार जी सिंघई जयपुर से ऋषभांचल, गाजियाबाद में आयोजित कार्यक्रम मुलाकात हुई, एक ही कमरे में ठहरे थे, इसलिए उक्त कृति पर आदरणीय प्रोफेसर साहब से विस्तार से चर्चा करने का अवसर मिला। साथ ही यह भी पता चला कि प्राकृत के वे मूर्धन्य मनीषी हैं, प्राकृत भाषा में भी एक कृति लिख रहे हैं।

कृति का प्रकाशन परमपूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद से परम पूज्य मुनि श्री प्रणम्यसागरजी महाराज के रजत जयंती वर्ष के पावन अवसर पर किया गया है।

प्रकाशक प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान, लाडनूँ (राज.) है। कृति के प्रारंभ में परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का शुभाशीष प्रकाशित है। जिसमें उन्होंने लिखा है कि-'प्रस्तुत टीकाकार

आगमों की गहराइयों को स्पर्श करने वाले मनीषी विद्वान्, प्रौढ़ वक्ता, कुशल स्याद्वाद विद्या अध्येता, अल्पवय में तत्त्वनिर्णय में ख्याति प्राप्त पण्डित प्रवर श्रीयांशकुमारजी सिंघई जयपुर ने टीका जगत् में सम्प्रति अभिनव नामांकन कर दिया है। प्राचीन टीका शैली के पुनर्स्थापन का श्रेष्ठ कार्य 'समख्याति टीका' है।'

समणसुत्तं की 'समख्याति:' संज्ञक यह संस्कृत टीका बुद्धिजीवियों को सुगमता से समणसुत्तं ग्रन्थ के अवबोधन की अनुकूलता प्रदान करेगी। जिज्ञासु छात्रों, अनुसंधाताओं एवं विचारक विद्वानों के लिए उनके तुलनात्मक -समीक्षात्मक अध्ययन व्यवसाय में यह टीका उनका मार्ग प्रशस्त कर सकेगी - ऐसी मुझे आशा है।

शिखरजी दर्शनार्थ पधारने वाले यात्रियों के लिए सुविधा

शिखरजी दर्शनार्थ पधारने वाले यात्रियों की सेवा एवं आपातकालीन स्थिति में काम आने के लिए एक-एक ऑटोमैटिक ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर मशीन श्री राकेश जैन परिवार दिल्ली के श्री मितेश जैन, रजनी जैन, गौरव जैन, श्वेता जैन, अभिषेक जैन, आशीष जैन, राहुल जैन, मेघा जैन, ऋतु जैन, आस्था जैन, हंसिका जैन ने परिवार ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी शाखा कार्यालय, मधुबन के वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमनकुमार सिन्हा एवं दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी के सहायक प्रबंधक श्री मनोज जैन को

दातारों ने अपने हाथों से सौंपा। इस अनमोल जीवनदायिनी उपहार के लिए दोनों संस्थाओं के प्रबंधकों ने दातार परिवार का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया|

मधुबन कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमनकुमार सिन्हा ने कहा कि भगवान न करें इस मशीन की आवश्यकता किसी को हो फिर भी दातारों को आश्वासन दिया कि किसी भी व्यक्ति को जरुरत पड़ ही गई तो रात्रि में भी यह सुविधा उपलब्ध करा दी जाएगी | इस अवसर पर श्री नागेन्द्र कुमार सिंह, श्री देवेंद्र जैन, श्री पवन शर्मा फर्श जोशी, श्री राजेश जैन, श्री पंकज जैन, श्री चंदन दुबे, श्री कार्तिक राणा आदि उपस्थित थे।

तीर्थक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी पर मोक्ष सप्तमी के अवसर पर तीर्थयात्रियों की सुविधा हेतु सहयोग देते वीर सेवादल के सहयोगी

वीरानामुर तीर्थक्षेत्र को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से सहायता चेक प्रदान करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी के तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश & पौण्डीचेरी अंचल अध्यक्ष श्री दिनेश सेठी |

रचनात्मक सूत्र प्रदान करती हैं तीर्थंकर पार्श्वनाथ की शिक्षाएं

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म बनारस के राजा अश्वसेन और रानी वामादेवी के यहां पौष कृष्ण एकादशी के दिन हुआ था। जैन परंपरा में वर्तमान में तीर्थंकर पार्श्वनाथ बहुत ही लोकप्रिय और श्रद्धालुओं की आस्था के प्रमुख केन्द्रबिन्दु हैं। चिंतामणी, विघ्नहर्ता, संकटमोचक आदि के रूप में भी इनकी खूब प्रसिद्धि है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ क्षमा के प्रतीकः तीर्थंकर पार्श्वनाथ क्षमा के प्रतीक हैं। हर व्यक्ति उत्कर्ष तो चाहता है पर उपसर्ग, कष्ट, संघर्ष से बचना चाहता है पर बिना उपसर्ग के, बिना संघर्ष, बिना चैलेंज के जीवन में उत्कर्ष संभव नहीं। जो उपसर्ग और चुनौतियों को समता से जीवन में सहन करता हैं वह भगवान भी बन जाता है। ऐसे ही मरुभूति के जीव ने दस भव तक अपने सगे भाई कमठ का उपसर्ग सहन किया, वह मरुभूति आगे जाकर तीर्थंकर पार्श्वनाथ बन गए। भगवान पार्श्वनाथ का अतीत संघर्षमय रहा है। दस भव तक निरंतर जीवन घात होने पर भी कभी क्षोभ नहीं किया, न अन्य को दोषी ठहराया, धैर्य पूर्वक सहन किया, तभी संसार के बंधनों से मुक्त हुए। पार्श्वनाथ भगवान के पदचिन्हों पर चलकर हम सभी भी अपना जीवन कल्याण कर सकें।

लोकव्यापी चिंतन का जनमानस पर प्रभावः अपने उपदेशों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह पर अधिक बल दिया। उनके सिद्धांत व्यावहारिक थे, इसलिए उनके व्यक्तित्व और उपदेशों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और उड़ीसा में फैले हुए लाखों सराकों, बंगाल के मेदिनीपुर जिले के सदगोवा ओर उडीसा के रंगिया जाति के लोग पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानते हैं। मैने खुद अनेक बार पश्चिम बंगाल के सराक क्षेत्र में जाकर देखा है। पार्श्वनाथ के सिद्धांत और संस्कार इनके जीवन में गहरी जडें जमा चुके हैं। इसके अलावा सम्मेदशिखर के निकट रहने वाली भील जाति पार्श्वनाथ की अनन्य भक्त है। भगवान पार्श्वनाथ की जीवन-घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति, समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं। इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथापूर्व है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लम्बे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया। उनका धर्म व्यवहार की दृष्टि से सहज था, जिसमें जीवन शैली का प्रतिपादन था।

भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रतिमाएं: उनकी ध्यानयोग की साधना वास्तव में आत्मसाधना थी। भय, प्रलोभन, राग-द्वेष से परे। उनका कहना था कि सताने वाले के प्रति भी सहज करुणा और कल्याण की भावना रखें। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रतिमाएं और मंदिर हैं तो वहीं उन पर बड़ी मात्रा में साहित्य का सर्जन भी हुआ है।

लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र मोक्ष स्थली सम्मेदशिखर: साधना करते हुए श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सम्मेदशिखरजी पर्वत से वे मोक्ष को प्राप्त हुए। सम्मेदशिखरजी झारखंड प्रांत में स्थित है। यह स्थान जैन समुदाय का सबसे प्रमुख तीर्थस्थान है। जिस पर्वत पर पार्श्वनाथ को निर्वाण प्राप्त हुआ वह पारसनाथ हिल के नाम से जाना जाता है। लाखों श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आते हैं। इस तीर्थ के बारे में कहा जाता है कि

'एकबार वंदे जो कोई, ताहि नरक-पशु गति नहिं होई'

अर्थात् जो भी श्रद्धालु सच्चे भाव से एकबार इस तीर्थ स्थान के दर्शन कर लेता है फिर उसको नरक और पशु गति प्राप्त नहीं होती। उनके जन्म स्थान भेलूपुर वाराणसी में बहुत ही भव्य और विशाल दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। यह स्थान विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है।

पार्श्वनाथ पर सर्वाधिक भक्ति साहित्य का सृजन: तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भक्ति में अनेक स्तोत्र का आचार्यों ने सृजन किया है, जैसे- श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र, कल्याण मंदिर स्तोत्र, इन्द्रनंदि कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र, राजसेनकृत पार्श्वनाथाष्टक, पद्मप्रभमलधारीदेव कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र, विद्यानंदिकृत पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि। स्तोत्र रचना आराध्यदेव के प्रति बहुमान प्रदर्शन एवं आराध्य के अतिशय का प्रतिफल है। अतः इन स्तोत्रों की बहुलता भगवान पार्श्वनाथ के अतिशय प्रभावकता का सूचक है। भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारा श्रमण परम्परा में भगवान पार्श्वनाथ का ऐतिहासिक एवं गौरवशाली महत्व रहा है। भगवान पार्श्वनाथ हमारी अविच्छिन्न तीर्थंकर परम्परा के दिव्य आभावान योगी ऐतिहासिक पुरुष हैं। सर्वप्रथम डॉ. हर्मन याकोबी ने 'स्टडीज इन जैनिज्म' के माध्यम से उन्हें ऐतिहासिक पुरुष माना।

नूतन आध्यात्मिक समाजवाद का सूत्रपात: ''पार्श्वयुग में अब तक जो जीवन-मूल्य व्यक्ति-जीवन से संबद्ध थे, उनका समाजीकरण हुआ और एक नूतन आध्यात्मिक समाजवाद का सूत्रपात हुआ। जो काम महात्मा गांधी ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अहिंसा को लोक जीवन से जोड़ कर किया, वही काम हजारों वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ ने अहिंसा की व्याप्ति को व्यक्ति तक विस्तृत कर सामाजिक जीवन में प्रवेश दे कर दिया। यह एक अभूतपूर्व क्रान्ति थी, जिसने युग की काया ही पलट दी।'

भगवान पार्श्वनाथ की जीवन-घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति, समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं। इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथापूर्व है। हिंसा और अहिंसा का द्वन्द भी हमें इन घटनाओं में अभिगुम्फित दिखाई देता है।

अगाध श्रद्धा से मनायी जाती है मुकुट सप्तमी पर्व (मोक्ष सप्तमी): जैनधर्म के लोकप्रिय 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की निर्वाण तिथि श्रावण शुक्ल सप्तमी को मुकुट सप्तमी पर्व (मोक्ष सप्तमी) के रूप में वृहद् स्तर पर मनाए जाने की प्राचीन परंपरा जैनधर्म में है। इस दिन जैन मंदिरों में जहां विशेष अभिषेक, पूजा-अर्चना, शांतिधारा और पार्श्वनाथ भगवान का निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है वहीं विशेष रूप से महिलाएं, युवतियां व्रत-उपवास रखती हैं। अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक आयोजन होते हैं। व्रतों के उद्यापन भी किये जाते हैं।

शून्य की खोज हेतु अन्तर्राष्ट्रीय दल का गठन

शून्य का आविष्कार भारत में हुआ था किन्तु भारत में किसने एवं कब किया? यह अनुसंधान का विषय Zero Origin India-Netherland नामक गैर सरकारी संगठन ने 2021 में ऑनलाइन सेमिनारों की श्रंखला के बाद इसकी आख्या का अन्तर्राष्ट्रीय मानको के अनुरूप प्रकाशन का निर्णय किया है। इसमें 'Zero in Jain Literature' शीर्षक आलेख डॉ. अनुपम जैन का है। निम्न 2 विद्वान इसके संस्करणों के सम्पादन का कार्य देख रहे है।

Dr. Robert Lawrence Kuhn (Academic Edition)
Dr. Peter Getzels (Popular Edition)

प्राप्त विभिन्न आलेखों के परीक्षण के उपरान्त इन सभी में उल्लिखित तथ्यों को समाहित करते हुए एक joint paper तैयार करने का दायित्व निम्नांकित विद्वानों की समिति को दिया गया है।

1. Prof. Jeff Oaks (Arabic world)
2. Prof. Friedhelm Hoffman (Egypt)
3. Prof. Jim Ritter (Mesopotamia)
4. Prof. Anupam Jain (Jain Literature)
5. Prof. Avinash Sathaye (India)
6. Dr. Marina Ville (Europe)

समिति अपने joint paper को अंतिम रूप प्रदान करेंगी। एतदर्थ विचार विमर्श गतिमान है।

जैन समुदाय के लिए यह गौरव की बात है। उसके प्रतिनिधि को इस मिषन में सम्मिलित कर जैनाचार्यों के अवदान को यथेष्ट महत्त्व दिया है।

- कु. तनिष्का जैन

श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा

- प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', वाराणसी

अपने भारत देश में वैदिक एवं श्रमण – ये दोनों संस्कृतियाँ प्राचीन काल से ही समृद्ध रही हैं, और इन दोनों में ही चातुर्मास का अत्यधिक महत्त्व है। श्रमण जैन परंपरा में तो चातुर्मास को चार मास के लंबे महापर्व के रूप में आयोजित किए जाने का विधान हैं। वर्षाकाल के आरंभ से ही चार माह के लिए एक ही स्थान पर लंबे प्रवास में साधु-साध्वियों के ज्ञान, ध्यान और संयम साधना का लाभ समाज को प्राप्त होता है। चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के अनेक चातुर्मास का विवरण हमें प्राकृत जैनागमों से प्राप्त होता है । इस चातुर्मास काल में आष्टान्हिक पर्व, रक्षाबंधन, पर्युषण-दशलक्षण सांवत्सरिक महापर्व, क्षमावाणी तथा तीर्थंकरों के पञ्च कल्याणकों जैसे अनेक पर्व भी मनाए जाते हैं।

वस्तुतः यत्र-तत्र गमनागमन रूप विहारचर्या श्रमण जीवन की एक अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण चर्या है। इसीलिए श्रमण को अनियत विहारी कहा जाता है। क्योंकि उत्तराध्ययन सूत्र (४/६) में कहा है कि "भारण्ड-पक्खीव चारेऽप्पमत्तो" – अर्थात् श्रमण को भारण्ड पक्षी की तरह ग्रामानुग्राम आदि क्षेत्रों में अनासक्त भाव से निरंतर विचरण करते हुए अपनी साधना में लीन रहना चाहिए। इससे सम्यग्दर्शन की शुद्धि, स्थितिकरण, रत्नत्रय की भावना, शास्त्राभ्यास, शास्त्र कौशल, तीर्थ क्षेत्रों की वंदना के साथ ही आवश्यकतानुसार समाधिमरण के योग्य क्षेत्रों का अन्वेषण जैसे सहज लाभ इस अनियत विहारचर्या से प्राप्त हो जाते हैं। किन्तु वर्षाकाल के चातुर्मास में चार माह तक निरंतर एक स्थान पर प्रवास करने का भी शास्त्रीय प्रावधान है।

चातुर्मास की अवधारणा - श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास अर्थात् वर्षावास, जैनमुनिचर्या का आचारगत अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण योग है। इसे वर्षायोग, वर्षावास अथवा चातुर्मास भी कहा जाता है। श्रमण केआचेलक्य आदि दस स्थितिकल्पों में अन्तिम पर्युषणा कल्प है। जिसके अनुसार वर्षा काल के चार महीने भ्रमण अर्थात् आवागमन,विहार आदिका त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान है। वर्ष के बारह महीनों को मौसम की दृष्टि से प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया गया है-

१. ग्रीष्म– चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़।
२. वर्षा – श्रावण, भाद्रपद, आश्विन तथा कार्तिक।
३. शीत –मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन।

यद्यपि ये तीनों ही विभाजन चार-चार माह के हैं, किन्तु वर्षाकाल के चार महीनों का एकत्र नाम चातुर्मास, वर्षावास आदि रूप में प्रसिद्ध है। श्वेताम्बर जैन आगम परम्परा में "पर्युषण कल्प" नाम से वर्षावास का वर्णन प्राप्त होता है। बृहत्कल्पभाष्य में इसे 'संवत्सर' कहा गया है। वस्तुतःवर्तमान युग में पर्यावरण बहुत कुछ बदल गया है। अब न तो वर्षाकाल में पूरी तरह वर्षा का भरोसा रहता है, न शीतकाल में भरपूर ठण्ड का और न इसी तरह अन्य ऋतुओं का।

वर्तमान युग में तो गर्मी के बढ़ते प्रकोप से सभी त्रस्त रहते हैं। पर्यावरण प्रदूषण का असर सर्वत्र देखा जा सकता है। किन्तु अब से सात – आठ दशक पूर्व तक ऐसी स्थिति नहीं थी। पहले आवागमन के आज जैसे साधन भी नहीं थे। बड़ी-बड़ी सड़कों का जाल नहीं था। वर्षाकाल में प्रायः सदा आकाश मण्डल में घटाएं छायी रहती थीं तथा प्रायः वर्षा भी निरन्तर होती रहती थी। अतः वर्षाकाल में यत्र-तत्र भ्रमण या विहार के मार्ग रुक जाते हैं, नदी, नाले उमड़ पड़ते हैं। वनस्पतिकाय आदि हरित्काय मार्गों और मैदानों में फैल जाती है। सूक्ष्म-स्थूल जीव-जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं। अतः छोटे -बड़े किसी भी प्रकार के जीवों को हमारे चलने फिरने से कष्ट न पहुंचे,उनकी विराधना और आत्म विराधना (घात) से बचने के लिए श्रमण धर्म में वर्षा काल में वर्षायोग धारण, इस चातुर्मास में एकत्र-वास का विधान किया गया है। यही समय एक स्थान पर स्थिर रहने का सबसे उत्कृष्ट समय होता है। श्रमण और श्रावक-दोनों के लिए इस चातुर्मास का धार्मिक तथा आध्यात्मिक और संयम साधना के विकास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्व है। इसीलिए श्रमण या उनके संघ के चातुर्मास (वर्षा योग) को श्रावक उसी प्रकार प्रिय और हितकारी अनुभव करते हैं, जिस प्रकार चकवा चन्द्रोदय को, कमल सूर्य को और मयूर मेघोदय को।

चातुर्मास का औचित्य - अपराजितसूरि ने कहा है कि वर्षाकाल में स्थावर और जंगम सभी प्रकार के जीवों से यह पृथ्वी व्याप्त रहती है। उस समय भ्रमण करने पर महान् असंयम होता है। वर्षा और शीत वायु (झंझावात) से आत्मा की विराधना होती है। वापी आदि विविध जलाशयों में गिरने का भय रहता है। जलादि में छिपे हुए ठूठ, कण्टक आदि से अथवा जल, कीचड़ आदि से कष्ट पहुँचता है और अपना जीवन भी खतरे में पड़ सकता है।

आचारांग में कहा है कि वर्षाकाल आ जाने पर तथा वर्षा हो जाने से तथा बहुत से प्राणी उत्पन्न हो जाते हैं, बहुत से बीज अंकुरित हो जाते हैं। मार्गों में बहुत से प्राणी एवं बीज उत्पन्न हो जाते हैं। बहुत हरियाली उत्पन्न हो जाती है। ओस और पानी बहुत स्थानों में भर जाता है। काई आदि स्थान-स्थान पर व्याप्त हो जाती है। बहुत से स्थानों पर कीचड़ या पानी से मिट्टी गीली हो जाती है। मार्ग रुक जाते हैं, मार्ग पर चला नहीं जा सकता। मार्ग सूझता नहीं है, अतः इन परिस्थितियों को देखकर मुनि को वर्षा काल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम विहार नहीं करना चाहिए। अपितु वर्षाकाल में यथावसर प्राप्त वसति में ही संयत रहकर वर्षावास व्यतीत करें। बृहत्कल्पभाष्य के अनुसार वर्षावास में गमन करने से पृथ्वी, जल, तेज, वायु, वनस्पति और त्रस -- इन षट्कायिक जीवों का घात तो होता ही है, साथ ही वृक्ष की शाखा आदि सिर पर गिरने, कीचड़ में रपट जाने, नदी में बह जाने, काँटा आदि लगने के भय रहते हैं।

श्रमण जैनमुनि को प्रत्येक कल्पनीय कार्य करते समय अहिंसा और विवेक की दृष्टि रखना अनिवार्य है। वर्षाकाल में विहार करते रहने में अनेक बाधाओं के साथ ही जीव-हिंसा की बहुलता सदा रहती है, इसीलिए वर्षाकाल चार माह तक एक स्थान पर स्थिर रहकर वर्षायोग धारण का

विधान है। इस प्रकार जैन परम्परा के साथ ही प्रायः सभी भारतीय परम्पराओं के धर्मों में साधुओं को वर्षाकाल के चार माह में एक स्थान पर स्थित रहकर धर्म-साधन करने का विधान है।

चातुर्मास का समय - सामान्यतः आषाढ़ से कार्तिक पूर्वपक्ष तक का समय वर्षा और वर्षा से उत्पन्न जीव-जीवाणुओं तथा अनन्त प्रकार के तृण, घास और जन्तुओं के पूर्ण परिपाक का समय रहता है । इसीलिए चातुर्मास (वर्षावास) की अवधि आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी की पूर्वरात्रि से आरम्भ होकर कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की पश्चिम रात्रि तक मानी जाती है।

वर्षावास के समय में एक सौ बीस दिन तक एक स्थान पर रहना उत्सर्ग मार्ग है। विशेष परिस्थिति अथवा कारण होने पर अधिक और कम दिन भी ठहर सकते हैं। अर्थात् आषाढ़ शुक्ल दसमी से चातुर्मास करने वाले कार्तिक की पूर्णमासी के बाद तीस दिन तक आगे भी सकारण एक स्थान पर ठहर सकते हैं। अधिक ठहरने के प्रयोजनों में वर्षा की अधिकता, शास्त्राभ्यास, शक्ति का अभाव अथवा किसी की वैयावृत्य करना आदि हैं। आचारांग में भी कहा है कि वर्षाकाल के चार माह बीत जाने पर अवश्य विहार कर देना चाहिए, यह तो श्रमण का उत्सर्ग मार्ग है। फिर भी यदि कार्तिक मास में पुनः वर्षा हो जाए और मार्ग आवागमन के योग्य न रहे तो चातुर्मास के पश्चात् वहाँ पन्द्रह दिन और रह सकते हैं।

समय की दृष्टि से वर्षावास के जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट-- ये तीन भेद बताये हैं। इनमें सांवत्सरिक प्रतिक्रमण (भाद्रपद शुक्ल पंचमी) से कार्तिक पूर्णमासी तक सत्तर दिनों का जघन्य वर्षावास कहा जाता है। श्रावण से कार्तिक तक-चार माह का मध्यम चातुर्मास है तथा आषाढ़ से मृगसिर तक छह माह का उत्कृष्ट वर्षावास कहलाता है। इसके अन्तर्गत आषाढ़ बिताकर वहीं चातुर्मास करें और मार्गशीर्ष में भी वर्षा चालू रहने पर उसे वहीं बितायें।' स्थानांग वृत्ति में कहा है कि प्रथम प्रावृट (आषाढ़) में और पर्युषण कल्प के द्वारा निवास करने पर विहार न किया जाए। क्योंकि पर्युषण कल्प पूर्वक निवास करने के बाद भाद्र शुक्ल पंचमी से कार्तिक तक साधारणतः विहार नहीं किया जा सकता, किन्तु पूर्ववर्ती पचास दिनों में उपयुक्त सामग्री के अभाव में विहार कर भी सकते है।

बृहत्कल्पभाष्य में वर्षावास समाप्त कर विहार करने योग्य समय के विषय में कहा है कि जब ईख बाड़ों के बाहर निकलने लगें, तुम्बियों में छोटे-छोटे तुंबक लग जायें, बैल शक्तिशाली दिखने लगे, गाँवों की कीचड़ सूखने लगे, रास्तों का पानी कम हो जाए, जमीन की मिट्टी कड़ी हो जाय तथा जब पथिक परदेश को गमन करने लगे तो श्रमण को भी वर्षावास की समाप्ति और अपने विहार करने का समय समझ लेना चाहिए।

चातुर्मास के योग्य स्थान -

श्रमण को वर्षायोग के धारण का उपयुक्त समय जानकर धर्म-ध्यान और चर्या आदि के अनुकूल योग्य प्रासुक स्थान पर चातुर्मास व्यतीत करना चाहिए। आचारांग सूत्र में चातुर्मास योग्य स्थान के विषय में कहा है कि वर्षावास करने वाले साधु या साध्वी को उस ग्राम-नगर खेड, कवंट, मडंब, पट्टण, द्रोणमुख, आकर (खदान), निगम, आश्रय, सन्निवेश या राजधानी की स्थिति भलीभाँति जान लेनी चाहिए। जिस ग्राम-नगर यावत् राजधानी में एकान्त में स्वाध्याय करने के लिए विशाल भूमि न हो, मल-मूत्र त्याग के लिए योग्य विशाल भूमि न हो, पीठ (चौकी) फलक, शय्या एवं संस्तारक की प्राप्ति सुलभ न हो और न प्रासुक (निर्दोष) एवं एषणीय आहार-पानी सुलभ न हो, जहाँ बहुत से श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि, दरिद्र और भिखारी पहले से आए हुए हों और भी दूसरे आनेवाले हों, जिससे सभी मार्गों पर जनता की अत्यन्त भीड़ हो और साधु-साध्वी को भिक्षाटन, स्वाध्याय, शौच आदि आवश्यक कार्यों के लिए अपने स्थान से सुखपूर्वक निकलना और प्रवेश करना भी कठिन हो, स्वाध्याय आदि क्रिया भी निरुपद्रव न हो सकती हो, ऐसे ग्राम-नगर आदि में वर्षाकाल प्रारम्भ हो जाने पर भी वर्षावास व्यतीत न करे।

श्वे. जैन आगम कल्पसूत्र की कल्पलता टीका के अनुसार जैन साधु - साध्वियों को चातुर्मास के योग्य स्थान में निम्नलिखित गुण होना चाहिए-- जहाँ विशेष कीचड़ न हो, जीवों को अधिक उत्पत्ति न हो, पंचम समिति के सम्यक् पालन हेतु शौच-स्थल निर्दोष हो, रहने का स्थान शान्तिप्रद एवं स्वाध्याय योग्य हो, गोरस की अधिकता हो, जनसमूह भद्र हो, राजा धार्मिक वृत्ति का हो, भिक्षा सुलभ हो, श्रमण-ब्राह्मण का अपमान न होता हो। ऐसे ही अनुकूल और निरापद स्थान चातुर्मास के सर्वथा योग्य होते हैं।

वर्षायोग ग्रहण एवं उसकी समाप्ति की विधि -

यद्यपि वट्टकेराचार्य द्वारा रचित मूलाचार आदि प्राचीन ग्रन्थों में वर्षायोग ग्रहण आदि की विधि का स्पष्ट उल्लेख नहीं है ,किन्तु उत्तरवर्ती विद्वान पं॰ आशाधर प्रणीत ग्रन्थ अनगार धर्मामृत में कहा है कि आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी की रात्रि के प्रथम पहर में पूर्व आदि चारों दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्यभक्ति चार बार पढ़कर सिद्धभक्ति, योगभक्ति, पंचगुरुभक्ति और शान्तिभक्ति करते हुए आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग ग्रहण करना चाहिए। तथा कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के पिछले पहर में इसी विधि से वर्षायोग को छोड़ना चाहिए। आगे बताया है कि वर्षायोग के सिवाय अन्य हेमन्त आदि ऋतुओं में अर्थात् ऋतुबद्ध काल में श्रमणों का एक स्थान में एक मास तक रुकने का विधान है।

अनगार धर्मामृत में ही आगे कहा है कि जहाँ चातुर्मास करना अभीष्ट हो, वहाँ आषाढ़ मास में वर्षायोग के स्थान पर पहुँच जाना चाहिए तथा मार्गशीर्ष महीना बीतने पर वर्षायोग के स्थान को छोड़ देना चाहिए। कितना ही प्रयोजन होने पर भी वर्षा योग के स्थान में श्रावण कृष्णा चतुर्थी तक अवश्य पहुँच जाना चाहिए। इस तिथि का उल्लंघन नहीं करना चाहिए तथा कितना ही प्रयोजन होने पर भी नहीं। कार्तिक शुक्ल पंचमी तक वर्षायोग के स्थान से अन्य स्थान को नहीं जाना चाहिए। यदि किसी दुर्निवार उपसर्ग आदि के कारण वर्षायोग के उक्त प्रयोग में अतिक्रम करना पड़े तो साधु को प्रायश्चित्त लेना चाहिए।

वर्षायोग धारण के विषय में श्वेताम्बर परम्परा के कल्पसूत्र में कहा है कि मासकल्प से विचरते हुए निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को आषाढ़ मास की पूर्णिमा को चातुर्मास के लिए वसना कल्पता है। क्योंकि निश्चय ही वर्षाकाल में मासकल्प विहार से विचरने वाले साधुओं और साध्वियों के द्वारा एकेन्द्रिय

से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों को विराधना होती है। कल्पसूत्रनिर्युक्ति में भी कहा है कि आषाढ़ मास की पूर्णिमा तक नियत स्थान पर पहुँचकर श्रावण कृष्ण पंचमी से वर्षावास प्रारम्भ कर देना चाहिए। उपयुक्त क्षेत्र न मिलने पर श्रावण कृष्ण दसमी से पाँच-पाँच दिन बढ़ाते-बढ़ाते भाद्र शुक्ल पंचमी तक तो निश्चित ही वर्षावास प्रारम्भ कर देना चाहिए, फिर चाहे वृक्ष के नीचे ही क्यों न रहना पड़े। किन्तु इस तिथि का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

चातुर्मास में भी विहार करने के कारण -

भगवती आराधना ग्रंथ की विजयोदया टीका में अपराजितसूरि के अनुसार वर्षायोग धारण कर लेने पर भी यदि दुर्भिक्ष पड़ जाए, महामारी फैल जाये, गाँव अथवा प्रदेश में किसी कारण से उथल-पुथल हो जाए, गच्छ का विनाश होने के निमित्त आ जाये तो देशान्तर में जा सकते हैं। क्योंकि ऐसी स्थिति में वहाँ ठहरने से रत्नत्रयधर्म और संयम की विराधना होगी। आषाढ़ की पूर्णमासी बीतने पर प्रतिपदा आदि के दिन देशान्तर गमन कर सकते हैं। स्थानांगसूत्र में इसके पांच कारण बताये हैं–

१. ज्ञान के लिए, २. दर्शन के लिए, ३. चारित्र के लिए, ४. आचार्य या उपाध्याय की सल्लेखना/समाधिमरण के अवसर पर तथा५. वर्षाक्षेत्र से बाहर रहे हुए आचार्य अथवा उपाध्याय का वैयावृत्त्य करने के लिए।

साथ ही यह भी कहा है कि निर्ग्रन्थ और साध्वियों को प्रथम प्रावृट् चातुर्मास के पूर्वकाल में ग्रामानुग्राम विहार नहीं करना चाहिए। संघ में रहकर साधना ,संयम और ज्ञानाभ्यास करना चाहिए।

किन्तु इन पाँच कारणों से विहार किया भी जा सकता है–

१. शरीर, उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर,

२. दुर्भिक्ष होने पर,

३. किसी के द्वारा व्यथित किये जाने पर अथवा ग्राम से निकाल दिये जाने पर,

४. बाढ़ आ जाने पर तथा

५. अनार्यों द्वारा उपद्रुत किये जाने पर।

इस प्रकार श्रमण के लिए चातुर्मास अर्थात् वर्षावास का समय उसी प्रकार कषायरूपी अग्नि एवं मिथ्यात्व रूपी ताप को त्याग एवं वैराग्य की शीतल धारा से तथा स्वाध्याय और ध्यान की जलवृष्टि से शान्त करने का होता है, जिस प्रकार जल के शीतलधारा बरसकर धरती की तपन शान्त करती है। इस तरह जैन परम्परा में चातुर्मास का धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में विकास का महत्त्व तो है ही, इससे राष्ट्रप्रेम के साथ ही व्यक्ति और समाज को एक सूत्र में पिरोने का, वैर भाव दूर करके मैत्री,सौहार्द्र एवं समरसता का वातावरण निर्मित करने का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य सिद्ध होता है।

विरोधियों से डरना नहीं वरन कार्य करना ही कुशलता - मुनि श्री सुधासागर

मुनिश्री बोले अच्छे कार्यों की प्रशंसा जरूर करें

क्षेत्रपाल मंदिर ललितपुर में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव सुधासागर महाराज ने कहा विरोध जीवन को सीख देता है विरोधियों से डरना नहीं वरन उनसे बचकर अपने काम करना ही कार्य की कुशलता है। सत्य सर्वभौम्य है अगर उसका विरोध होता है तो डरना नहीं वरन वह परीक्षा की घडी होती है जिसमें जीत हमेशा सत्य की होती है। मुनि श्री ने कहा ऐसा कार्य करो जिससे परिवार और समाज का मस्तिष्क सदैव गर्व से ऊंचा रहे।

मुनि श्री ने कहा आलोचना से डरना नहीं वरन बचकर अपना कार्य करो सफलता निश्चय मिलेगी। उन्होने कहा अपनी शक्ति को पहिचानो और भावनाए अमनोल कर दो। उन्होने कहा मनुष्य पर्याय हमें दुर्लभ से मिली है सोचो यदि हम मुनि नहीं बन पाए तो फिर क्यां मिलेगी इसके लिए कुछ ऐसा करो जिससे जीवन सार्थक हो जाए।

अच्छे कार्य न कर पाओ तो कम से कम दूसरे के अच्छे कार्यों की प्रशंसा जरूर करें। दान न दे पाओ तो दान देने वाले की प्रशंसा जरूर करना।

ललितपुर से अक्षय अलया एवं डॉ. सुनील संचय ने जानकारी देते हुए बताया कि आज प्रातःकाल क्षेत्रपाल मंदिर मूलनायक वेदिका पर अभिषेक की मांगलिक क्रियाए हुई इसके उपरान्त शान्तिधारा मुनि श्री के मुखारविन्द से हुई जिसका पुण्यार्जन आशीष जैन दिल्ली, अनिल कुमार अक्षय कुमार अजय अलया परिवार, विकास ओसवाल सीए परिवार ने प्राप्त किया। धर्मसभा में पाद प्रक्षालन एवं दीप प्रज्जवलन के पुण्यार्जक परिवार एवं श्राविकाओं ने मुनि श्री को शास्त्र भेंट किया।

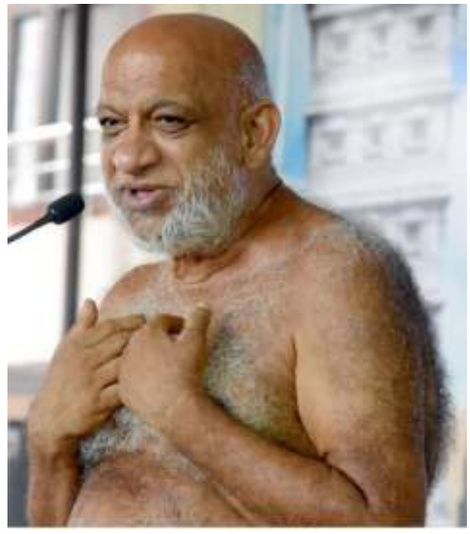

मुनि सुधासागर महाराज एवं मुनि पूज्यसागर महाराज अपने संघस्थ एलक धैर्यसागर महाराज एवं क्षुल्लक गम्भीर सागर महाराज के ललितपुर चातुर्मास में दर्शनार्थ धर्मालुजनों के पहुचने का सिलसिला थम नहीं रहा है। प्रातःकाल से मुनि संघ की भक्ति पूजन आहार चर्या आचार्य भक्ति जिज्ञासा समाधान में सम्मलित होकर भक्तगण पुण्यार्जन कर रहे हैं।

जैन पंचायत के अध्यक्ष अनिल जैन अंचल क्षेत्रपाल मंदिर प्रबंधक राजेन्द्र जैन थनवारा मोदी पंकज जैन सभासद , मनोज बबीना आदि ने अतिथियों का स्वागत किया।

आजादी के आंदोलन में जैन भी हुए थे शहीद

- डॉ. ज्योति जैन, खतौली

भारतवर्ष आजादी का अमृत महोत्सव का आयोजन कर रहा है। आजादी के लिए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम १८५७ में हुआ, फिर १९४७ में। स्वतंत्रता के आन्दोलन में जैन समाज ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जैन समाज के योगदान पर जैन जगत के मूर्धन्य विद्वान लेखक इतिहास डॉ.कपूरचंद जैन खतौली का अतुलनीय योगदान है, उन्होंने जो कार्य किया वह अत्यंत ही श्रम, साध्य व अविस्मरणीय है। देश के महान सपूतों को नमन करते हुए हम महिला नेत्री डॉ. ज्योति जैन खतौली के इस लेख को पढ़कर जैन जगत के योगदान को पहचान सकते हैं। सम्पूर्ण जानकारी के लिए स्वतंत्रता संग्राम में जैन पुस्तक हम सबको अवश्य पढ़नी चाहिए।

राजेन्द्र जैन "महावीर" सनावद

यह वर्ष हमारी 'आजादी का स्वर्ण जयन्ती' वर्ष है। शहीदों की शौर्यगाथा किसी भी राष्ट्र की मूल्यवान सम्पत्ति होती है। शहीदों का स्मरण मात्र ही धमनियों में देश-भक्ति के रक्त का संचार कर देता है। भारत ने 'जियो और जीने दो' का सन्देश देकर विश्वशांति की कामना की है, पर परतंत्रता की बेड़ियों को कभी स्वीकार नहीं किया। अहिंसावादी जैन धर्म के अनुयायियों ने भारत की आजादी की लड़ाई कंधे से कंधा मिलाकर लड़ी। हमारे अनेक जैन-भाई बहिन आजादी की लड़ाई में शहीद हो गये थे। आइये स्वर्ण जयन्ती वर्ष में अपने अमर शहीदों का स्मरण करते हुए उन्हें न केवल जैन समाज अपितु राष्ट्र की श्रद्धांजलि समर्पित करें।

अमर जैन शहीद लाला हुकुमचन्द कानूनगो

भारतीय इतिहास में १८५७ की क्रांति का महत्वपूर्ण स्थान है। इस क्रांति-यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देने वाले शहीद लाला हुकुमचन्द जैन का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। लाला हुकुमचन्द ने अपनी शिक्षा और प्रतिभा के बल पर मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त कर लिया। १८४१ ई. में मुगल बादशाह ने आपको हांसी और करनाल जिले के इलाकों का कानूनगो एवं प्रबन्धकर्त्ता नियुक्त किया था। इस बीच अंग्रेजों ने हरियाणा प्रान्त को अपने अधीन कर लिया। १८५७ में जब स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल बजा तो लाला जी में भी कुछ कर गुजरने की तमन्ना जागी। दिल्ली जाकर बादशाह जफर से भेंट की और देशभक्त नेताओं के उस सम्मेलन में शामिल हुए जिसमें रानी लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे आदि थे। लाला जी स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए जीवन की अन्तिम घड़ी तक संघर्ष करने का संकल्प ग्रहण कर हांसी वापिस लौटे और हांसी में देशभक्त बीरों को इकट्ठा किया।

जंब अंग्रेजों की सेना हांसी होकर दिल्ली पर धावा बोलने जा रही थी तब उस पर आपने हमला किया और उसे भारी हानि पहुँचायी। लाला जी एवं उनके साथी मिर्जा मुनीर बेग ने एक पत्र बादशाह को लिखा जिसमें सहायता की मांग की किन्तु, पत्र का कोई उत्तर नहीं आया इसी बीच बादशाह जफर अंग्रेजों द्वारा बन्दी बना लिये गये। अंग्रेजों ने जब बादशाह की निजी फाइलों को टटोला तो, लाला जी द्वारा भेजा पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गया और उन्होंने लिखने वाले के विरुद्ध कठोर कार्यवाही का आदेश दिया। लाला जी और मिर्जा मुनीर बेग के घर छापे मारे गये और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 18 जनवरी 1858 को दोनों को 'फांसी की सजा सुनायी गयी। लाला हुकुमचन्द के मकान के आगे दोनों को फांसी दे दी गयी। अंग्रेजी राज का आतंक फैलाते हुए इन शहीदों के शव को उनके रिश्तेदारों को न देकर धर्म विरुद्ध लाला जी को दफनाया गया और मिर्जा मुनीर को जला दिया गया। इतना ही नहीं लाला जी के तेरह वर्षीय भतीजे फकीरचन्द जैन को भी पकड़कर वहीं फांसी पर चढ़ा दिया गया। स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास का यह क्रूरतम अध्याय था। स्वतन्त्रता प्राप्त के बाद लाला हुकुमचन्द की याद में हांसी में उनके नाम का पार्क एवं उनकी प्रतिमा लगाई गयी है।

अमर शहीद लाला हुकुमचंद जैन की स्मृति में हाँसी (हरियाणा) में निर्मित लाला हुकुमचंद जैन पार्क, बीच में उनका स्टेच्यू लगा है।

अमर जैन शहीद फकीर चन्द

1857 के स्वातन्त्रय समर में हजारों निरपराध मारे गये। ऐसे ही निरपराधी थे 43 वर्षीय अमर शहीद फकीरचन्द जैन जिनकी शहादत देखकर जनसाधारण के हृदय में आक्रोश का लावा फूट पड़ा था। फकीरचन्द लाला हुकुमचन्द जैन के भतीजे थे। लाला हुकुमचन्द ने 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महती भूमिका निभायी थी। 19 जनवरी 1858 को हुकुमचन्द और उनके साथी को जब फांसी दी जा रही थी तो फकीरचन्द जनता के साथ ही वहां खड़ा था। पर अचानक यह क्या हुआ? गोराशाही ने बिना किसी अपराध के, बिना किसी बारन्ट के उसे पकड़ा और वहीं फांसी पर लटका दिया। फकीरचन्द अल्पवय

अमर शहीद अमरचंद बांठिया

में ही देश के लिए शहीद हो गये।

अमर जैन शहीद अमरचन्द बांठिया

1857 के स्वतन्त्रता की अमर गाथा जाने अनजाने शहीदों ने अपने रक्त से लिखी है। इसी संग्राम के एक शहीद थे अमरचन्द बांठिया। अमरचन्द बांठिया ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुये 1857 के महासमर में जूझ रहे क्रांतिवीरों की संकट के समय आर्थिक सहायता तथा खाद्य सामग्री आदि देकर मदद की। अमरचन्द बांठिया ग्वालियर रियासत क्षेत्र में कारोबार करते थे। इनके गुणों से प्रभावित होकर ग्वालियर नरेश जयाजीराव सिंधिया ने इन्हें "गंगाजली" राजकोष का कोषाध्यक्ष बना दिया। इस कोषालय में असीम धन सम्पदा थी जिसका अनुमान सिंधिया नरेशों को भी न था। बांठिया जी की दिनचर्या नियमित थी, जिनदर्शन, जिनपूजा और शास्त्र प्रचचन सुनना उनकी दिनचर्या में शामिल थे। देश की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान बांठिया जी को था। उनके हृदय में ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी विचारधारा पनपने लगी, जो धीरे-धीरे आक्रोश में बढ़ती गयी। एक अधिकारी ने जब कहा कि मातृभूमि को दासता की बेडियों से मुक्त कराने के लिए हथियार क्यों नहीं उठाते? तो बांठिया जी ने निर्भीकता से उत्तर दिया -' भाई कुछ शारीरिक विषमताओं के कारण हथियार तो मैं उठा नहीं सकता लेकिन समय आने पर ऐसा काम करूँगा जिससे क्रांति के पुजारियों को शक्ति मिलेगी और उनके हौसले बुलन्द हो जायेंगे।' बांठिया जी के लिए यह समय शीघ्र ही आ गया रानी झांसी और उनकी सेना जब ग्वालियर में युद्ध कर रही थी, तो कई महीनों से वेतन और समुचित राशन का प्रबन्ध नहीं हो पा रहा था। ऐसे संकट के समय ग्वालियर राजकोष के कोषाध्यक्ष भामाशाह अमरचन्द बांठिया ने उच्चकोटि की देशभक्ति का परिचय दिया और राजकोष से क्रांतिकारियों की सहायता की | बांठिया जी द्वारा दी गयी सहायता से क्रांतिकारियों का संकट दूर हुआ और उनके हौंसले बुलन्द हुए। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई लड़ते-लड़ते शहीद हो गयीं। ग्वालियर में नरेश जयाजी राव पुनः सत्ता में आ गये। बांठिया को देशद्रोह के अपराध में गिरफ्तार किया गया। रानी झांसी के बलिदान के बाद २२ जून १८५८ को ग्वालियर की जमीन पर न्याय का ढोंग रचकर सर्राफा बाजार में स्थित नीम के पेड पर बांठिया जी को फांसी पर लटका दिया गया। पूर्ण अहिंसावादी अमरचन्द बांठिया ने मातृभूमि की आजादी के लिए सहायता ही तो की थी? यह उनकी देशभक्ति की भावना से लिया गया निर्णय था कोई अपराध तो न था? कर के रुप में लिया गया धन जनता की आजादी की लड़ाई के लिए ही दिया गया। सभ्यता का दम भरने वाली ब्रिटिश हुकूमत की क्रूरता की पराकाष्ठा ही तो थी कि देशभक्त बांठिया जी को फांसी पर लटका कर उनकी लाश को यूं ही तीन दिन टागें रखा गया। ग्वालियर के सर्राफा बाजार में खड़ा नीम का पेड़ अतीत की उस गौरवमय कुर्बानी की याद दिलाता है।

अमर जैन शहीद मोतीचन्द जैन

प्रसिद्ध क्रांतिकारी अर्जुन लाल सेठी एक बार दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा के अधिवेशन में मुख्य वक्ता के रुप में सांगली गये वहीं उनकी भेंट दो तरुणों से हुई उनमें से एक थे अमर शहीद मोतीचन्द शाह। मोतीचन्द शाह का एक ही लक्ष्य था किस तरह देश को आजाद करवाया जाये। सेठी जी उन्हें जयपुर ले आये। मोतीचन्द का परिचय राजस्थान के प्रसिद्ध क्रांतिकारी जोरावर सिंह वारहठ से हुआ, जिनके गाँव देवपुरा में उन्होंने शस्त्र-अस्त्र चलाने की शिक्षा ली तथा क्रांतिकारी दल में शामिल हो गये। क्रांतिकारी दल का काम अर्थाभाव के कारण ठप होता जा रहा था। अत: मोतीचन्द, जोरावर सिंह, माणिक चन्द, शिवनारायण द्विवेदी आदि युवकों ने किसी देशद्रोही धनिक को मारकर धन लाने का निश्चय किया। परिणामतः "'निमेज" जिला शाहाबाद (बिहार) के महंत को मारकर भी तिजोरी की चाबी न मिल पाने के कारण इच्छित धन प्राप्त नहीं कर सके | यह घटना मार्च 1893 की है।

इस घटना के बाद अर्जुन लाल सेठी अपने शिष्यों के साथ इन्दौर चले गये। एक दिन अचानक पुलिस द्वारा शिवनारायण द्विवेदी की तलाशी ली गयी तो उसके पास कुछ क्रांतिकारी परचे निकले। तभी पुलिस को महंत की हत्या के सुराग मिले। पुलिस ने सबको गिरफ्तार किया। कई माह मुकदमा चला। पं. विष्णुदत्त शर्मा को दस वर्ष का काला पानी तथा मोतीचन्द को फांसी की सजा हुई। अर्जुन लाल सेठी को जयपुर के जेल में बन्द कर दिया गया। मोतीचन्द की प्राण रक्षा के लिए अपीलें की गयीं वे सब व्यर्थ गयीं और अन्त में उन्हें 1915 ई. में फांसी पर लटका दिया गया। जेल में खून से लिखा गया मराठी भाषा में उनका पत्र आज भी युवकों को उतना ही स्फूर्तिदायक है।

अमर शहीद सिंघई प्रेमचन्द जैन
दमोह (म. प्र.)

अमर जैन शहीद सिंघई प्रेमचन्द

स्वतन्त्रता आन्दोलन में

गांधीजी के आहवान पर पढ़ाई-लिखाई छोड़कर आजादी की लड़ाई में सम्मिलित होकर गांधीजी के सन्देशों को गाँव-गाँव प्रचार करने वाले नवयुवक थे अमर शहीद सिंघई प्रेमचन्द जैन। दिसम्बर १९३३ में गाँधी जी दमोह नगर आये। गाँधी जी से प्रभावित प्रेमचन्द गांधीमय हो गये। वे गाँव-गाँव में डुग्गी बजाकर गाँधी जी के संदेशों का प्रचार करने लगे। देशभक्ति की लगन देखकर श्री प्रेम शंकर धगट आपको गाँधी आश्रम मेरठ ले गये। मेरठ में तीन वर्ष रहकर पुन: सक्रिय कार्यकर्त्ता के रुप में दमोह आ गये।

द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो चुका था। सागर के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर दमोह पधारे, उन्होंने सेना में भर्ती हेतु जन समुदाय को संबोधित किया उनका भाषण चल ही रहा था कि सिंघई प्रेमचन्द ने सिंह गर्जना करते हुए कहा कि - "यह युद्ध हमारे देश के हित में नहीं है, हमें कोई मदद नहीं करनी है, हम सब इसका बहिष्कार करते हैं।' इस ललकार से डिप्टी कमिश्नर क्रोध से आग बबूला हो उठे, पुलिस ने प्रेमचन्द को पकड़ लिया, सभा में उत्तेजना फैल गयी, तब डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि - 'हम तो इन्हें भाषण देने के लिए बुला रहे हैं। अब ये भाषण देंगे। प्रेमचन्द ने बड़ा ओजस्वी भाषण दिया। जनसमूह ने ' प्रेमचन्द जिन्दाबाद' के नारे लगाये। डिप्टी कमिश्नर पुलिस संरक्षण में किसी तरह जान बचाकर भागे।

गाँधी जी द्वारा चलाये गये व्यक्तिगत आन्दोलन में प्रेमचन्द ने १४ जनवरी १९४१ को हटा तहसील में मकर संक्राति के उपलक्ष्य में लगे मेला में उपस्थित जनसमुदाय के बीच ओजस्वी भाषण दिया। आपको गिरफ्तार कर दमोह लाया गया और कारावास की सजा सुनायी गयी। प्रेमचन्द को पहले सागर फिर नागपुर जेल में भेज दिया गया। इसे विधि की विडम्बना कहें या प्रेमचन्द को मातृभूमि पर शहीद होने का सौभाग्य। जिस डिप्टी कमिश्नर को दमोह में प्रेमचन्द के कारण सभा से भागना पड़ा था वह स्थानान्तरित होकर नागपुर जेल पहुँचे। वहाँ प्रेमचन्द को देखकर पूर्व स्मृतियाँ उद्बुद्ध हो गयीं, उसने प्रेमचन्द को समय से पहले रिहा किया और विशेष आग्रहपूर्वक भोजन कराया प्रेमचन्द को क्या मालूम कि ' जिस भोजन को वे कर रहे हैं उसमें उनकी मृत्यु उन्हें दी गयी है।' नागपुर से दमोह टिकट आदि की व्यवस्था कर उन्हें ट्रेन में बैठा दिया गया उधर दमोह में उनके आगमन की खबर सुनकर जनता उनके स्वागत के लिए तैयारी में जुट गयी पर यह क्या? ट्रेन में ही प्रेमचन्द की हालत बिगड़ने लगी किसी तरह उन्हें घर लाया गया जहाँ सभी चिकित्सकों ने एक मत से कहा कि उन्हें दिया विष शरीर में इतना फैल चुका है जिसे हटा पाना मुश्किल है और प्रेमचन्द शहीद हो गये उनकी शहादत चिरस्मरणीय रहेगी। दमोह में उनकी प्रतिमा लगाया जाना प्रस्तावित है।

अमर जैन शहीद मगनलाल ओसवाल

१९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन ने आजादी की लड़ाई में एक निर्णायक भूमिका निभायी है। इन्दौर की मोरसली गली में मगनलाल की छोटी सी किराने की दुकान थी। १९४२ में जब आन्दोलन छिड़ा तब आपकी शादी हो गयी थी और पिता भी बन गये थे पर क्या 'आजादी के दीवानों को परिवार के बंधन बांध सके'? इन्दौर शहर में रोज सभायें, जुलूस, गिरफ्तारियाँ, गोली, डन्डे चल रहे थे। इसी क्रम में ६ दिसम्बर १९४२ को एक जुलूस निकला जिसका नेतृत्व पुरुषोत्तमलाल विजय कर रहे थे। मगनलाल भी आगे-आगे नारे लगाते हुए चल रहे थे जब जुलूस सर्राफा बाजार पहुँचा तो भारी संख्या में पुलिस आ गयी और जुलूस को घेर लिया। पुलिस ने अचानक ही इन अहिंसक सत्याग्रहियों पर लाठियों और गोलियों की बौछार शुरु कर दी मगनलाल को भी गोली लगी और वे वहीं गिर पड़े। मगनलाल को पुलिस अस्पताल ले गयी बहुत लम्बे समय तक वे अस्पताल में रहे। घाव ठीक न होने से अंततः आजादी की लड़ाई का यह सिपाही देश की आजादी का सपना संजोये 23 दिसम्बर १945 को वीरगति को प्राप्त हो गया।

अमर जैन शहीद वीर उदय चन्द

वे देशभक्त धन्य हैं जो मातृभूमि के लिए हंसते-हंसते शहीद हो गये। ऐसे ही अमर शहीद वीर उदय चन्द जैन थे। १९४२ के "अंग्रेजों भारत छोड़ो ' एवं ' करो या मरो' आन्दोलन ने जहाँ सारे देश को हिला दिया वहां मंडला नगर कैसे पीछे रहता | सभी प्रमुख नेताओं को जेल में बन्द कर दिया गया सभी को अपने विवेक से निर्णय लेना था। उदयचन्द उस समय मैट्रिक के छात्र थे। १५ अगस्त को नर्मदा गंज में जुलूस निकलने वाला था उस जुलूस में उदयचन्द भी शामिल हुये। जिलाधीश कार्यालय पर पहुँचकर जुलूस सभा में परिवर्तित हो गया। सभा अभी चल ही रही थी कि पुलिस ने लाठी चलानी शुरु कर दी। हवा में गोलियाँ भी चलायी। सभा तितर-बितर हो गयी। जनता जोर-शोर से नारे लगा रही थी। उप जिलाधीश ने पुलिस को गोली चलाने का आदेश दिया, वीर उदयचन्द ने अपनी कमीज फाड़ते हुए छाती खोल दी और पुलिस को ललकारते हुए कहा कि "चलाओ गोली वे उसे झेलने के लिए तैयार हैं। पुलिस की गोली चली और भारत माता की जय के साथ उदयचन्द गिर पड़े। लोग उनकी तरफ दौड़े पर पुलिस उन्हें उठाकर शासकीय अस्पताल ले गयी। नगर के सभी वर्गों के लोग अस्पताल की ओर दौड़ पड़े। उपस्थित जनसमुदाय भारत माता की जय आदि नारे लगा रहे थे। १६ अगस्त को प्रात: उदयचन्द वीरगति को प्राप्त हो गये, वे देश के लिए शहीद हो गये। उदयचन्द की कीर्ति को चिरस्थायी बनाने के लिए महराजपुर में जहाँ उनकी समाधि है प्रतिवर्ष मेला लगता है। मंडला में उदय चौक और उदय स्तम्भ बना हुआ है। नगरपालिका द्वारा उदय प्राथमिक विद्यालय बनाया गया है। हम सब इस वीर सपूत की शहादत को हमेशा स्मरण कर

अमर शहीद वीर उदयचंद जैन का स्मारक, मण्डला (म०प्र०)

गौरवान्वित होते रहेंगे।

अमर जैन शहीद साबूलाल वैशाखिया

श्री साबूलाल जैन का जन्म १९२३ ई. में गढ़ाकोटा जिला सागर (म.प्र.) में हुआ था। जलियांवाला बाग, भगत सिंह, आजाद चन्द्रशेखर जैसे बलिदानियों के किस्से सुनकर बचपन से ही उनमें देश-प्रेम की भावना घर कर गयी थी जो समय के साथ-साथ बढ़ती गयी। १९४२ का ' भारत छोड़ो आन्दोलन' का नारा हर देशवासियों का एक संकल्प बन गया। चारों तरफ "करो या मरो', अंग्रेजों भारत छोड़ो की गूंज सुनाई देने लगी। इस माहौल में भला साबूलाल कैसे पीछे रहते उन्हें लगा कि अब समय आ गया है कि मैं भी मातृभूमि के लिए कुछ करूं ?

२२ अगस्त १९४२ के दिन गढ़ाकोटा में एक वृहत सभा का आयोजन किया गया और सर्वसम्मति से तय हुआ कि अंग्रेजी शासन के प्रतीक पुलिस थाने पर तिरंगा झन्डा फहराया जाये। तत्काल ही इस सभा ने एक जुलूस का रुप धारण कर लिया। जुलूस 'भारत माँ की जय', 'इंकलाब जिन्दाबाद', 'अंग्रेजों भारत छोड़ो! आदि नारे लगाता हुआ पुलिस थाने पहुंचा। नवयुवकों में पुलिस थाने पर तिरंगा झंडा फहराने की होड़ सी लग गयी। पुलिस ने चेतावनी दी पर आजादी के मतवाले कहाँ मानने वाले थे। पुलिस ने लाठी चार्ज और फायरिंग शुरु कर दी। साबूलाल भी झंडा लिये आगे बढ़ रहे थे उन्हें पता था कि - 'आगे बढ़ना मौत को आमंत्रण देना है पर जो सर से कफन बांधकर चला हो उसे जीवन का मोह कैसा? धांय- धांय-धांय तीन गोलियां चली और साबूलाल गिर पड़े। साबूलाल और उनके साथियों को सागर अस्पताल भेजा गया। साबूलाल शहीद हो गये। जनता ने भारत माता के इस अनमोल रत्न को अश्रुपूर्ण अंतिम विदाई दी। साबूलाल की स्मृति में सागर (म.प्र.) में एक कीर्ति स्तम्भ का निर्माण किया गया है। गढ़ाकोटा के प्राइमरी स्कूल का नाम साबूलाल के नाम पर रखा गया है।

अमर शहीद वीर भूपाल अण्णाप्पा अणस्कुरे

अमर शहीद अण्णा साहेब पत्रावले का सांगली (महाराष्ट्र) स्थित स्टेच्यू

साबूलाल ने देश की आजादी के लिए जो कुर्बानी दी उस पर हम सबको गर्व है।

१९४२ के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में महाराष्ट्र के अनेक सपूत देश के लिए न्यौछावर हो गये | सांगली (महाराष्ट्र) के ' अन्ना साहब पत्रावले ' २४ जुलाई १९४३ को सांगली जेल में शहीद हो गये। मुरगुड (कोल्हापुर) के भारमल तुकाराम १३ दिसम्बर १९४२ को कोषागार लूटते हुए पकड़े गये और पुलिस की गोली से उसी दिन शहीद हो गये। इसी आन्दोलन में श्री भूपाल ' अणाप्पा अंस्कुरे' शहादत को प्राप्त हुये थे। साताप्पा टोपण्णावर गीधर वर्तक भी १९४२ के आन्दोलन में शहीद हो गये। गुजरात प्रांत की कुमारी जयावती सिंघवी १९४२ के आन्दोलन में अहमदाबाद में विद्यार्थियों के जुलूस का नेतृत्व करते हुए पुलिस द्वारा छोड़ी गयी अश्रु गैस के कारण ५ अप्रैल १९४३ को शहीद हो गयीं। अमर शहीद "नाथालाल शाह' ९ नवम्बर १९४३ को अहमदाबाद में अपने विद्यार्थी जीवन में ही शहीद हो गये थे।

मध्यप्रदेश के सिलौडी (जबलपुर) गाँव के अमर शहीद केथीलाल १९३० के जंगल सत्याग्रह में राष्ट्रीय ध्वज अपनी छाती से चिपकाये हुए गोली के शिकार हो गये। उनकी स्मृति में सिलौडी में एक स्मारक है। जबलपुर के शहीद 'मुलायमचन्द जैन' एक क्रांतिकारी से मिलते जुलते चेहरे के कारण पकड़े गये और पुलिस की बर्बसतापूर्ण पिटाई के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। दमोह के शहीद 'भैयालाल चौधरी' कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन से वापिस आते हुए ट्रेन में अंग्रेज अफसरों से झगड़ा हो जाने के कारण मार दिये गये थे।

राजस्थान के अमर जैन शहीद और शहीद आनंदी और शहीद शांति ५ अप्रैल १९४८ की राष्ट्रीय ध्वज के अपमान की मत्सर्ना हेतु निकाले गये जुलुस में बड़ा बाज़ार घंटाघर, उदयपुर में पुलिस की गोली का शिकार हो गये अनेक कार्यकर्त्ता घायल हो गये।

JAIN SITES OF TAMILNADU

Continued from last issue....

Jain universe: Mahāmeru, Nandīśvaradvīpa

The Jain conception of the universe is very complex; texts describe in great detail the different worlds, cosmic oceans, lands and mountains, etc. Visual depictions of the Jain perception of the cosmos, carved or painted, are exhibited in temples in order to help the devotees to understand the basic structure of the universe, knowledge considered necessary for spiritual development.

According to Jain cosmology, there are three worlds in the world space (loka ākāśa): a lower world, a middle world and an upper world; outside is the unlimited non-world space (aloka ākāśa). The souls live in the three worlds, moving from one to another according to their karma; when finally liberated, they dwell in eternal bliss at the apex of the worlds. Humans live in the innermost part of the middle world. This middle world is a disc, constituted of numerous concentric continents called islands (dvīpa) separated by rings of oceans. Among **the cosmological depictions commonly encountered in Tamil Jain temples are the central world mountain Meru, situated at the centre of the middle world, and the continent-island called Nandīśvara-dvīpa.**

Mahāmeru

At the centre of the middle world is the **circular continent called Jambū-dvīpa, in the middle of which rises mount Meru, the cosmic axis. This mountain is also at the core of the universe in Buddhist and Hindu cosmologies.**

It is described as having three tiers and being crowned with a self-created or natural Jain temple.

The representations of mount Meru in Digambar temples in Tamil Nadu are usually made of metal and show a four-tiered conical mountain on a square base with a jar (**kalaśa**) at the top; four seated Jinas are carved on each tier, facing the cardinal directions. Sometimes, five such merus are arranged in a line, representing the five merus (**pañcameru). This group of five includes the central one, in the midst of Jambū-dvīpa, then called Sudarśana, and four other sacred mountains located on adjacent continent-islands, where humans live: Vijaya in eastern Dhātakīkhaṇḍa-dvīpa, Acala in western Dhātakīkhaṇḍa-dvīpa, Mandara in eastern Puṣkarārdha-dvīpa, and Vidyunmāli in western Puṣkarārdha-dvīpa.**

Stone Meru image (Kilvailamur, Ādinātha temple)

Metal Meru image (Tiruppanamur, Puṣpadanta temple)

The five merus at the centre of a three-dimensional representation of Nandīśvara-dvīpa (Ponnurmalai, Ādinātha temple)

Nandīśvaradvīpa

Jambū-dvīpa, the central continent, is surrounded by **numerous concentric ring-shaped islands, separated by oceans. One of them has been frequently represented in Jain art, Nandīśvara-dvīpa, the 8**th or 15th island from the centre, depending on the sources. It is the place where Gods worship the Jinas, in temples crowning each of the fifty-two mountains of the island. There are four mountains of black colour located at the four cardinal directions. Each of these mountains is surrounded by four white-coloured and eight golden peaks. This makes four groups of thirteen mountains, standing in the four cardinal directions, all of them topped by a Jina temple.

Nandīśvara-dvīpa representations in Tamil Diagambara temples are either two-dimensional diagrams painted on walls or three-dimensional objects. The most common three-dimensional depiction is a four-faced and four-tiered truncated pyramid, topped by a jar (kalaśa), with thirteen seated Jinas on each side, evoking the Jinas housed in the temples of the four groups of thirteen

(Tindivanam, Pārśvanātha temple)

mountains. There are also, though far more rarely, large-scale three-dimensional representations, for

(Tiruppanamur, Puṣpadanta temple)

(Ponnurmalai, Ādinātha temple)

instance in the Ādinātha temple in Ponnurmalai, where all the fifty-two mountains, of black, white and golden colour, each topped by a temple housing a seated Jina, surround the five merus of the three innermost islands.

Pañcaparameṣṭhin, Navadevatā

Pañcaparameṣṭhin

A common symbolic representation in Jain temples is that of the pañcaparameṣṭhins, the 'five supreme ones', considered as major objects of veneration: the arhat, the siddha, the ācārya, the upādhyāya and the sādhu.

An arhat is a liberated soul who has not yet left his human body; the term is also used as a synonym of Jina. A siddha is a liberated and disembodied soul (residing at the top of the universe in an eternal state of perfection). An upādhyāya is a preceptor, a monk teaching the scriptures to others. An ācārya is a teacher at the head of a group of monks, who administers the religious practice of his disciples. And a sādhu is an ordinary monk, a virtuous person who has renounced worldly life and possessions.

(Tirumalai, Kundavai temple)

This group of five venerated beings is invoked daily in the most important mantra of the Jains, known by various names such as navakāramantra

(Pulal, Pārśvanātha temple)

or pañcanamaskāra. It has been depicted as a diagram in the shape of a lotus flower whose petals and center bear five seated figures, the central figure being the arhat (often flanked by fly-whisk bearers and surmounted by the triple umbrella). These visual representations of the pañcaparameṣṭhins found in Tamil temples are generally carved in stone or metal.

(Odalavadi, Ādinātha temple; navadevatā housed in a small open pavilion in the courtyard)

Navadevatā

Later in Digambara art, four more elements representing objects of worship have been added on the diagram: the Jina image (caitya), the Jain temple (caityālaya), scripture (śruta, symbolized by a book stand supporting an open book) and the wheel of law (dharmacakra). Digambara Jains call this diagram navadevatā, the 'nine deities'.

(Isakulathur, Mahāvīra temple)

(Ponnurmalai, Sīmandharanātha temple)

In Śvetāmbara tradition, it is generally referred to as siddhacakra, 'circle of liberated ones'; the four items added to the pañcaparameṣṭhins are the doctrinal concepts of right knowledge (jñāna), right faith (darśana), right conduct (cāritra) and right penance (tapas).

Navagrahas

The nine planetary deities in Tamil Jain temples are usually found on platforms sometimes sheltered in

Tayanur, Navagrahas in a small open pavilion to the northeast of the Ādinātha temple)

a separate pavilion. The sun (Sūrya), the moon (Candra), Mars (Maṅgala), Mercury (Budha), Jupiter (Bṛhaspati), Venus (Śukra), Saturn (Śani), Rāhu and Ketu, are arranged in a square or a circle around a central figure. Mostly found in the northern part of Tamil Nadu, they all seem to be late sculptures. To distinguish them from their Hindu counterparts, the Jain Navagrahas have a small Jina figure adorning their headdress. Each of them is associated with a Jina, as is made clear in some temples; in the Kunthunātha temple in Karandai, for instance, a list painted on a wall of the shrine dedicated to the Navagrahas gives the following connexions: Sūrya-Padmaprabha, Aṅgāra (Maṅgala)-Vāsupūjya, Guru (Bṛhaspati)-Vardhamāna, Budha-Mallinātha, Śukra-Puṣpadanta, Śani-Munisuvrata, Candra-Candraprabha, Rāhu-Nemi, and Ketu-Pārśva. In a few cases, the usual Navagrahas are replaced with 9 Jina figures (in Solai Arugavur and Kilsathamangalam, for instance).

(Ponnur, Ādinātha temple)

(Sevur, Ādinātha temple)

Pādukās

Pādukās, carved footprints of a holy figure, God or saint, are ancient objects of worship in India, in Jain as well as in Buddhist and Hindu traditions. Various Sanskrit names are

Pādukās, on lotus pedestals, of the 24 Jinas and of one gaṇadhara (Karandai, gallery of the Kunthunātha temple)

Footprints engraved on the rocky ground of a rock shelter in Vikramaṅgalam

Three pairs of pādukās, some Jain symbols and an inscription on the rocky ground of a rock shelter in Uranithaṅgal

Pavilion built on the bank of a pond near Karandai to shelter the pādukās ***of Akalaṅkācārya***

used to refer to these objects, such as pādukā (the term means 'sandal', but is also applied to the representation of feet), pādukā-śilā ('sandal-stone'), caraṇa, pāda ('foot'), pada ('footstep', 'footprint' or 'foot') or śrī-pada ('sacred foot', 'venerable foot') – tiruvaṭi in Tamil.

The foot is the lowest and potentially the most impure part of the body. That is why touching the feet is a mark of respect and humility towards any venerable person. Feet of elder, religious teachers and Gods are especially worshipped.

In a Jain context, pādukās often mark the place where a Jina or a renowned ascetic died. These footprints commemorate his presence on the place and illustrate the idea that, having reached perfection, he left his body as well as all material ties or, in the case of an ascetic not completely liberated, they symbolize a step on the path to liberation, towards a higher-level rebirth in which liberation will be possible. An inscription is often found nearby, giving information such as the ascetic's name, native place, date of death, duration of the fast before death...

Pādukās of three natives of Tiruppanamur who performed sallekhanā, the fast unto death: muni śrī Dharmasagar, who died in Shravana Belagola in 1940, muni śrī ***Sudharmasāgar, who died in Gajabandha in Maharashtra in 1973, and*** *śrī* ***Gajapatisāgar, who died in Tiruppan****amur in 1988 (Tiruppanamur, Puṣpadanta temple)*

Converted images

In the course of time, for various reasons, some Jain shrines fell into disuse and a number of them were converted into Hindu shrines. Some are now difficult to identify, for unambiguous evidence is lacking, the Jain images having been destroyed or removed from the place (or the cult image being only partially visible); but others are clear testimonies of such conversions. This is the case, for instance, in Aivarmalai (Dindigul Dt.), where a large natural cave was used as an abode for Jain monks. Just above the cave, 16 Jina images which may belong to the 9th century CE. or earlier have been carved on the rock. At present this is a Hindu site; the ground has been covered with cement and some **brick structures have been added to the cave, housing Hindu deities such as Draupadī Ammaṉ, Hanumān and Śiva in the form of several** liṅgas.

In many cases, the Jain images were not removed but worshipped as Hindu deities, with or without alteration of the sculpture.

In addition, many loose sculptures from ruined temples came to be worshipped under a new identity. From time to time, such cases are pointed out in the press.

"A fourth century idol of a Jain thirthankar has been found in Bommadimalai village, in Pudukottai district. The villagers were worshipping the idol just like a local deity calling it as Bommadi muni, until the idol was identified as that of a thirthankara by S. Madhavan, assistant professor, Department of Tamil, H.H. Rajah's College" (Source: Deccan Chronicle, Chennai, Saturday 28 November 2009).

Jina images may thus be worshipped nowadays by local people under various identities, such as muni, guardian deity, bhūta, Buddha, Muruganṉ, Viṣṇu, or even as a

Goddess...

Muni

Examples of Jinas that came to be identified as **munis can be seen in Melamadai (Madurai Dt.), where the main idol of the Pandimunishva [Pāṇṭimuṉīsvarar] temple was formerly a Jina, or in Puliyur (Karur Dt.), where a loose Jina sculpture is now worshipped b**y the local people as a Hindu God called Muni Appicci.

(Melamadai, Pandimunishvara)

Guardian deity

An example is found in Serumakkanallur (Tanjavur Dt.), where a Jina loose sculpture is worshipped by the locals as the village guardian deity Karuppacāmi.

Bhūta

In Idaiyur, two Tīrthaṅkara images of nice workmanship are found in a Māriyammaṉ temple which is located in Mettu Street. They are placed on each side of the temple's entrance. These images were unearthed from the outskirts of the village, in a place called 'Bhutamedu' (Pūtamēṭu, 'Hill of the bhūtas') and were brought to the temple. They are locally called 'Bhūta'.

Buddha

A Tīrthaṅkara loose sculpture is found in Pennakonam (Perambalur Dt.), together with a Goddess image, on a small platform by the roadside. The image is locally called 'Buddharsami' (Puttarcāmi: 'Lord Buddha'). There are other examples, such as in Adanjur (Tanjavur Dt.) or Maganipattu (Vellore Dt.).

Goddess

One example is found in Aliyar (Coimbatore Dt.), where a loose sculpture o**f a Jina located near rock shelters is now worshipped as a Hindu Goddess called Attāḷi Ammaṉ.**

(Aliyar, Attāḷi Ammaṉ)

Murugaṉ

In Mottamalai (Tiruchchirappalli Dt), a rock-cut Jina image is worshipped as Murugaṉ.

Viṣṇu

In Puduppair (Kanchipuram Dt), a Pārśvanātha sculpture is worshipped as Viṣṇu in the Ādikeśava-perumāḷ temple, the nāga Dharaṇendra shelterin g the Jina being identified with the snake associate d with Viṣṇu, Ananta or Śeṣa Nāga.

(Mottamalai, Murugaṉ)

(Puduppair, Viṣṇu)

Trimūrti

At the foot of the Puthur hill (Madurai Dt), a rock shelter adorned with rock-cut images of four Jinas has been converted into a Hindu site. The carved relief shows four figures, a small standing Jina and three larger seated Jinas who have their heads **surmounted by the triple umbrella. The central seated Jina is Pārśvanātha, with the** nāga undulating behind him and sheltering him with its five heads. The faces of the Jinas have been altered, especially by the addition of a moustache and of a tilak **on the forehead. The three seated Jinas are now worshipped as Brahmā, Viṣṇu and Śiva.**

रेवाड़ी में संपन्न आचार्य अतिवीर मुनिराज का चातुर्मास कलश स्थापना

हरियाणा की पुण्यधरा पर प्रथम बार धर्मनगरी रेवाड़ी में प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्तिसागर जी महाराज 'छाणी' परंपरा के प्रमुख संत परमपूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के 17वें मंगल चातुर्मास कलश स्थापना समारोह का ऐतिहासिक आयोजन दिनांक 24 जुलाई 2022 को व्यापक धर्मप्रभावना के साथ अतिशय क्षेत्र नसिया जी के प्रांगण में सानंद संपन्न हुआ। मूलनायक अतिशयकारी श्री शान्तिनाथ भगवान के श्रीचरणों में श्रीफल अर्पित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ हुआ। पं. श्री मनीष जैन 'संजू' (टीकमगढ़), श्री राजेश जैन शास्त्री, डॉ. अजेश जैन शास्त्री, श्री अंशुल जैन शास्त्री आदि स्थानीय विद्वानों के निर्देशन में सौभाग्यशाली महानुभावों द्वारा ध्वजारोहण, मंगलाचरण, चित्र अनावरण, जिनवाणी विराजमान, दीप प्रज्जवलन, शास्त्र भेंट व पाद-प्रक्षालन आदि मांगलिक क्रियाएं संपन्न हुईं।

इस अभूतपूर्व कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली जैन समाज के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन तथा पंजाब केसरी के कार्याध्यक्ष श्री स्वदेश भूषण जैन ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा आचार्य श्री का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। जैन दर्शन के मूर्धन्य विद्वान तथा अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् के यशस्वी अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस कुमार जैन (बड़ौत) ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में चातुर्मास काल में श्रमण व श्रावक की भूमिका का विवरण दिया तथा जैन धर्म की अभूतपूर्व प्रभावना में पूज्य आचार्य श्री के योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अतिशय क्षेत्र बड़ागांव स्थित त्रिलोक तीर्थ समिति ने नवम्बर 2022 में होने जा रहे गुरु मन्दिर पूजन समारोह में अपना आशीर्वाद व सान्निध्य प्रदान करने हेतु पूज्य आचार्य श्री के चरणों में निवेदन किया।

इस अवसर पर रेवाड़ी जैन समाज की महिलाओं व बच्चों ने तथा समाज द्वारा संचालित सभी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने अनेकों प्रेरक व मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिन्हें उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि से खूब सराहा। अध्यक्ष श्री पदम कुमार जैन ने अपने वक्तव्य में

रेवाड़ी में प्रस्तावित जैन पब्लिक कॉलेज के विषय में प्रकाश डाला। कार्यक्रम का कुशल सञ्चालन श्री राजेश जैन शास्त्री ने किया। समाज की सभी संस्थाओं व उपसमितियों के पदाधिकारियों द्वारा आचार्य श्री की अष्ट-द्रव्य के सुसज्जित थाल द्वारा विशेष पूजन किया गया। कार्यक्रम में अपनी मधुर संगीत लहरियों के साथ प्रीति जैन एन्ड पार्टी (जबलपुर) ने सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि चातुर्मास बाह्य यात्रा को विराम देकर अंतरंग की यात्रा को गति प्रदान करने का स्वर्णिम अवसर होता है। चातुर्मास का अवसर जीवन को सन्मार्ग की ओर ले जाने का माध्यम है। संत तो एक स्थान पर रूककर तथा साधना कर अपने कर्मों की निर्जरा कर लेता है, परन्तु श्रावकों को भी इस मौके का फायदा उठाने के लिए घर से निकल संत की चरण-सन्निधि में आना ही होगा। आचार्य श्री ने आगे कहा कि धर्मनगरी रेवाड़ी में प्रथम बार होने जा रहे वर्षायोग में अध्यात्म की वर्षा होगी। चातुर्मास काल में अनेक ग्रंथों की वाचना तथा स्वाध्याय संपन्न होगी। प्रभु की भक्ति, जिनवाणी की आराधना तथा जिनवचनों के रसपान से यह वर्षायोग ओतप्रोत होगा।

इस भव्य समारोह में राजधानी दिल्ली की विभिन्न कालोनियों के साथ-साथ गाज़ियाबाद, गुरुग्राम, फरीदाबाद, अलवर, तिजारा, फर्रुखनगर, नारनौल, कोसी कलां, मुंबई आदि जगह-जगह से पधारे हजारों मुनिभक्तों ने आचार्य श्री के चरणों में श्रीफल अर्पित कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस ऐतिहासिक चातुर्मास कलश स्थापना के अवसर पर प्रथम मुख्य कलश विराजमान करने का सौभाग्य सर्वोदय तीर्थ धारूहेड़ा के संस्थापक श्री राजकुमार प्रद्युमन जैन सपरिवार ने प्राप्त किया। समाज के 108 सौभाग्यशाली परिवारों को पंच-परमेष्टि कलश, रत्नत्रय कलश तथा भक्ति कलश विराजमान करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आयोजन समिति द्वारा बाहर से पधारे हुए सभी अतिथि व समाज श्रेष्ठियों का तिलक, माला व पटका पहनाकर सम्मान किया गया तथा चिह्न भेंट किया गया।

२३ वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण कल्याणक महामहोत्सव (मोक्ष सप्तमी) पर सम्मेदशिखर जी में भव्य आयोजन

स्वर्णभद्र कूट (पारसनाथ टोंक) पर चढ़ाया गया निर्वाण लाडू

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा दुल्हन की तरह सजाया गया पर्वत

तीर्थाधिराज शास्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी में जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ पर्वत स्थित स्वर्णभद्र टोंक पर हजारों श्रद्धालुओं द्वारा गुरूवार दिनांक ४ अगस्त, २०२२ मोक्ष सप्तमी के दिन भव्य निर्वाण लाडू चढाया गया, पारसनाथ टोंक पर प्रातः कालीन वेला में तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया एवं समाज के अनेक श्रेष्ठी महानुभावों की उपस्थिति में अभिषेक, शांतिधारा कर भव्य निर्वाण महोत्सव का कार्यक्रम संपन्न हुआ। मोक्ष सप्तमी पर मधुबन स्थित विभिन्न सस्थाओं में भी निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

प्रतिमा जी को ले जाते तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचन्द जी पहाड़िया मुम्बई एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जी पेंढारी नागपुर के निर्देशन में महीनों पूर्व से की जा रहीं महोत्सव की तैयारियों को लेकर शिखरजी में कार्यकर्ताओं के बीच व्यस्तता के साथ खूब उत्साह रहा। मधुबन सहित सम्पूर्ण पर्वतराज पर जगह-जगह स्वागत द्वार, साजसज्जा की गई थी। महोत्सव मनाने के लिए इस पावन तीर्थ को इंद्रपुरी की तरह सजाया गया था। आने वाले अतिथियों के लिए अनेकों जगह जलपान आदि तथा मेडीकल्न सुविधा का बंदोवस्त किया गया था। एम्बुलेंस व्यवस्था तथा प्रशासन का सहयोग चाकचौबंध था।

देश के कोने-कोने से पधारने वाले श्रद्धालुओं के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा पहाड़ पर व्यापक व्यवस्था – मोक्ष सप्तमी में भीड़-भाड़ को देखते हुए पारसनाथ पहाड़ पर व्यापक व्यवस्था की गयी थी। पारसनाथ टोंक पर पुलिस जवानों को तैनात किया गया था। पहाड़ के रास्ते भी जगह जगह जवानों की तैनाती की गयी थी। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा पारसनाथ टोंक पर भीड़ नियंत्रित करने के लिए वन-वे सिस्टम लागू किया गया था जिससे श्रद्धालुओं ने कतार बद्ध होकर दर्शन वंदन किये। मधुबन थाना प्रभारी पारसनाथ टोंक पर स्वयं विधि व्यवस्था संभाल रहे थे। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा पहाड़ पर स्थित गौतम स्वामी टोंक व पारसनाथ टोंक पर चिकत्सा कैम्प लगाया गया था। कैम्प में निशुल्क चिकत्सा, दवाइयां व प्राथमिक चिकत्सा सुविधा उपलब्ध कराई गयी थी। आपात स्थिति से निपटने के लिए जगह-जगह एम्बुलेंस तैयार रखा गया था। कैम्प में ऑक्सीजन कंसट्रेटर की भी व्यवस्था रखी गयी थी। यात्रियों की सुविधा के लिए पहाड़ के रस्ते पर जगह-जगह चाय-नास्ते की व्यवस्था भी की गयी थी।

पर्वत का स्वर्ग सा नजारा – भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सम्मेदशिखर जी पारसनाथ टोंक पर्वत को स्वर्ग सा सजाया गया था। विभिन्न प्रकार की लाइट, सीरिज एवं टोंक के अन्दर बहार विभिन्न प्रकार के फूल-मालाओं एवं वन्दनवारों से टोंक की सजावट की गयी थी। भगवान पारसनाथ टोंक (स्वर्ण भद्र कूट) मंदिर में स्थित टोंक को तथा गुफा चरण को भी सुन्दर तरीके से सजाया गया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा विभिन्न स्थानों पर अभिनन्दन बोर्ड लगाकर सम्मेद

शिखरजी पधारे सभी यात्रियों का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। मधुबन मोड़ से लेकर पारसनाथ पर्वत तक अनेक तोरण द्वार एवं लाइट की व्यवस्था की गयी थी, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिनवाणी एवं पारस चैनलों के द्वारा किया गया प्रसारण - प्रातः कालीन बेला में भगवान पारसनाथ की निर्वाण स्थली स्वर्णभद्र कूट पर अभिषेक –शांतिधारा एवं निर्वाण लाडू महोत्सव कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जिनवाणी चैनल के माध्यम से किया गया प्रसारण से जुड़कर घर बैठे सभी श्रद्धालुओं ने लिया धर्म लाभ लिया।

प्रत्येक वर्षों की भाँति गाजे बाजे के साथ अपार जनसमूह की सन्निधि में 20पंथी कोठी से जिनेन्द्र प्रभु की प्रतिमाजी को स्वर्णभद्र कूट पर ले जाकर श्रीजी का अभिषेक-शांतिधारा-पूजन किया गया तत्पश्चात निर्वाणलाडू समर्पित किया गया। भावों की अविरत्न सरिता मैं अवगाहन करते हुए भक्तमण्डली ने श्री पार्श्वनाथ टोंक तक इसबार धवल पाषाण की प्रतिमाजी को ले जाने का उत्साह दिखाते हुए गौरव प्राप्त किया। व्यवस्था बनाने में वीर सेवादत्र के सदस्यों की अहम्भूमिका रही। श्री शिखरजी स्वच्छता समिति की कार्यशैली को यात्रियों ने धन्यवाद दिया।

बीसपंथी कोठी द्वारा 123 कि.ग्रा. का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। गुणायतन की ओर से निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की गयी थी।

बताते चलें कि परम पूज्य अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी ऋषिराज

पर्वतराज पर पिछले कई दिनों से प्रवासरत हैं जहाँ पर उत्कृष्ट सिंहनिष्क्रीड़ित व्रतों की आराधना मौनव्रत के साथ तपस्या में लवलीन हैं। निर्वाणकल्याणक महोत्सव के समस्त कार्यक्रम षटरस त्यागी बयोवृद्ध स्थविराचार्य श्री संभवसागर जी महामुनिराज के परम आशीर्वाद से परम पूज्य श्री अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज के मंगत्र सान्निध्य मैं सम्पन्न हुए। मौके पर पूज्य आचार्य श्री प्रमुख सागर जी, आचार्य श्री विशद सागर जी, आचार्य श्री गुणभद्रनंदी जी, आचार्य श्री निपूर्णानंदी जी, वात्सल्यमूर्ति मुनिराज श्री पुण्यसागर जी ससंघ, पूज्य श्री प्रमाणसागर जी तथा आर्यिका श्री सुरत्नमति, आर्यिका श्री विशाखामति, आर्यिका श्री शुभमति, आर्यिका श्री विश्वधर्मश्री माता जी सहित समस्त चतुर्विध संघ का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। मधुबन में विराजमान विभिन्न संघों के समस्त मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्त्रक,क्षुल्लिका आदि चतुर्विध संघ के आशीर्वाद हेतु भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों द्वारा कार्यक्रम में मंगल सान्निध्य हेतु पूर्वाग्रह एवं आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में प्रमुख धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री ताराचंद जैन, परम सम्मानीय श्री अशोक जी पाटनी किशनगढ़, श्री विजय जी चूड़ीवाल गोवाहाटी, श्री ऋषभकुमार जी अहमदाबाद, श्री अशोक कुमार जी बड़ोदा रहे। कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद जी पहाड़िया सहित श्री संजय जी पापड़ीवाल औरंगाबाद, श्री संजय जी जैन,श्री मनोज जी जैन धनबाद, श्री प्रभात जी सेठी गिरिडीह आदि पदाधिकारियों की उपस्थिति गौरवमय रही। मधुबन कार्यालय एवं पर्वतराज पर कार्यरत सम्पूर्ण कार्यकर्ताओं की प्रशंसनीय भूमिका रही। सम्पूर्ण जानकारी वरिष्ठ प्रबधक श्री सुमन कुमार सिन्हा व प्रबंधक श्री देवेन्द्र कुमार जैन, शाखा कार्यालय मधुबन ने दी।

धर्म सम्मत दलों को तो श्रमण तीर्थों का संरक्षण करना चाहिये

-पद्मश्री कैलाश मड़बैया, भोपाल

इन दिनों देश में उपासना स्थलों के अतिक्रमण व नाम परिवर्तनों का दौर चल रहा है। दूसरे शब्दों में इसे असहिष्णुता भी कह सकते हैं। कहा जा रहा कि मुगलों/अंग्रेजों के शासन काल में हमारे पूजा स्थलों पर अतिक्रमण या नष्ट कर इसे ध्येय बनाया गया था अतः हमे गलती सुधारने या पूर्व स्थिति में लाने का हक है। सुनने में यह अच्छा भी लगता है। पर फिर दो प्रश्न हमारे मन में कोंधते हैं। एक-इस मिटाने बनाने बदलने बदलाने के दौर का अन्त आखिर कब व कहॉ रुकेगा ? जबकि अपनी ही भारत सरकार, आजादी के बाद Act 1991-"The places of worship special provisions" पारित कर चुकी है। चूंकि सत्तायें तो बदलती रहती है। फिर इसकी क्या गारंटी है कि आप जो बदल रहे उसे आने वाली सत्ता फिर नहीं बदलेगी? दूसरे-आज जिस की सत्ता है क्या वह भी तो सत्तांध हो वही पाप तो नहीं कर रहा है? या जिसकी लाठी उसकी भैंस की उक्ति चरितार्थ होने का ही मद है?

भारतीय जनता पार्टी आज देश का बड़ा राष्ट्रीय दल है और सत्तासीन भी, इसलिये स्वाभाविक ही अनेक अपेक्षायें और उपेक्षायें इससे जुडने लगीं हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् इसकी नींव में भी है। यह भी सर्व विदित है कि भारत के बहुसंख्यक हिन्दु समाज के लोग भाजपा की धुरी हैं।...और हाल ही में भाजपा नेतृत्व ने स्नेह सम्मेलन कर, नाराज अल्पसंख्यकों को साधने की सलाह दी है तो मुलिम व ईसाई समाज को साधा जा रहा है। फिर... अभिन्न श्रमण समाज को क्यों दूर किया जा रहा है? यह समझ से परे है। सनातन धर्मों में जैन धर्म एक प्रमुख धर्म है और इसके अनुयायी संविधान में अल्प संख्यक घोषित हैं। सत्य,अहिंसा और करुणा आदि गुणों के कारण जैन भी हिन्दु संस्कृति के बहुत करीब हैं, भले ही जैन धर्म एक स्वतंत्र,प्रथक और पूरातन धर्म है। वर्तमान गतिषीलता,प्रेम प्रसार और नफरत के उन्माद,दौनों का श्रेय सत्तारुढ़ दल को ही जाता है- यह भी स्वाभाविक है।

जैन धर्म के भारत में अनेकानेक तीर्थ हैं बल्कि यह कहें कि भारत में ऐसा कोई प्रदेश/क्षेत्र नहीं ,जहॉ जैन तीर्थ न हो जिन्हें अपनी पावनता, पुरातनता और अहिंसक गुणों के कारण अलग पहचान मिली हुई है। इसीलिये माना जाता है कि जैन धर्म कभी इस महादेश का जन धर्म रहा होगा। ...पर इन जैन तीर्थों में 2 ज्यादा विख्यात माने जाते हैं एक सम्मेद शिखर जी झारखण्ड में और दूसरा गिरनार जी गुजरात में। दोनों पर्वत पर आदि काल से पूज्य और प्रणम्य हैं। इतिहास और पुराण केवल जैन ही नहीं जैनेतर भी इनका महातम्य, उल्लेख करते मिलते है। अतः यह निर्विवादित सत्य और प्रमाणित तीर्थ हैं। पर विडम्बना देखिये कि भाजपा शासन काल में अन्य अल्पसंख्यकों की भॉति जैन अल्पसंख्यक भी सत्तारुढ़ दल के रवैये से बेहाल है। दुखी व परेशान हैं। ऐसा नहीं कि सभी जैन,भाजपा में ही हों पर विचारों से स्वदेशी व धार्मिक तो हैं ही इसलिये भाजपा के प्रति गहरा असंतोष और कहीं कहीं तो विद्रोह भी होने लगा कि जैन ही सर्वाधिक टेक्स दें, शिक्षा, स्वच्छता, मीडिया समर्थन दें और अयोध्या के राम मंदिर का समर्थन ही नहीं, सोने चॉदी की ईंटें तक दें और फिर भी जैनियों के ही तीर्थों पर कतिपय भाजपायी अनिधकृत कब्जा करें, उपासना का मौलिक हक छीनें, मात्र इसलिये कि जैन अहिंसक हैं। वे ईंट का जवाब पत्थर से नहीं,करुणा और मानवता से देते हैं।

गुजरात प्रान्त स्थित गिरनार पर्वत पर 22वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ के

कल्याणक हुये,मोक्ष भी यहीं से गये जिसके प्रतीक स्वरूप चारों टोंकों के जिनालयों के साथ, पॉचवीं टोंक पर निर्वाण के नैसर्गिक चरण जी चिन्ह आदिकाल से उत्कीर्ण है पर कतिपय अधोरियों/पण्डों ने इन पर बलात कब्जा कर, कथित दत्तात्रय की मूर्ति तक बिना प्रमाण के और कोर्ट के स्टे के बावजूद स्थापित कर ली। इतना ही नहीं वहॉ जाने बाले जिन भक्तों को दर्शन व पूजन से वंचित कर मारा पीटा तक जाता है। गुजरात सरकार का समर्थन एवं अक्रिमणकारी बहुसंख्यकों को संरक्षण प्राप्त है। भारत सरकार के Act 1991-"The places of worship special provisions" के अनुसार 15अगस्त 1947 की स्थिति नहीं बदली जा सकती। जैन तीर्थ गिरनार की स्थिति भी अपरिवर्तनीय है। इससे नाथ पण्डों का सभी निर्माण अवैधानिक है। कदाचित वोटों की राजनीति सरकार से यह सब गलत करा रही है। झारखण्ड प्रान्त में सम्मेद शिखर जी - जहॉ से चौबीस जैन तीर्थंकरों में से 20 तीर्थंकर निर्वाण प्राप्त कर मोक्ष गये थे अतः सम्पूर्ण पर्वत ही सिद्ध जैनतीर्थ के रूप में आदि काल से बन्दनीय है, पूज्य है। पुराणों में कहा जाता है पूजन में कि **'एक बार बन्दे जो कोई ताहि नरक पशुगति नही कोई।'** ऐसे सर्वमान्य पूज्य पर्वत तीर्थ पर, केन्द्रीय वन मंत्रालय ने, व झारखण्ड सरकार ने अनावश्यक छेड़ छाड़ कर 2अगस्त 2019 को बिना कोई विधिक औपचारिकता पूर्ण किये **'वन्य जीव अभ्यारण्य'**वाली अधिसूचना जारी कर अहिंसक पर्वत तीर्थ को हिसा के लिये खोल दिया और पर्यटन केन्द्र बना मास मदिरा और मनोरंजन का अड्डा बना कर महान गलती कर यह सिद्ध करने के प्रयास किये कि वे भी मुगलों आदि की तरह सत्तासीन हो अनुचित छेड़छाड़ कर अधर्मी हो चुके हैं। भूल गये कि 'मुई खाल की सांस सें सार भष्म हो जाय', जैन अहिंसक हैं नपुंसक नहीं। जैन संख्या में अल्प होने से जिताने की स्थिति में भले न हों पर ठान लेंगे तो किसी भी दल को हराने की स्थिति में अवश्य सदैव पर्याप्त हैं। अतः अल्पसंख्यक और अहिंसक जैनियों की मॉग अनुसार, भारत सरकार को उक्त अधिसूचना तत्काल निरस्त करना चाहिये और गुजरात सरकार को उपासना कानून 91 एवं वर्तमान कोर्ट के आदेशों का सम्मान करना चाहिये। गिरनार तीर्थ को जैनियों के लिये पूजा के लिये बख्शना चाहिये। गिरनार बहुत विशाल पर्वत है अतः 5फुट जगह चरणों वाली छोडकर कहीं भी अपनी स्थापना कर लें।

झारखण्ड सरकार को भी सम्मेदशिखर पर्वत राज को पावन पवित्र जैन तीर्थ स्थल घोषित कर भारतीय गौरव को सुरक्षित व अक्षुण्य रखना चाहिये। जैन समाज आदिवासियों के हक के खिलाफ नहीं है। महावीरजी जैन तीर्थ इसका उदाहरण है जहॉ आदिवासी गूजरों को दीर्घकाल से भगवान महावीर की जयकारा का हक, जैनियों से बहुत पहले दिया जाता है। सम्मेद शिखर के वन्य उत्पादों से जैनियों को कुछ लेना देना नहीं पर 20 मंदिरों / मठों के आसपास पावनता को बनाये रखा जाये। अनुयायियों को उपासना में विघ्न न डाला जाये। पर्यटन केन्द्र तो नीचे तलहटी में भी बनाया जा सकता है। भाजपा सरकारों को अनावश्यक अपने निकट के जैनियों को दूर नहीं करना चाहिये। जैन आने वाली किसी तिथि को काला दिवस मनायें इसके पूर्व सरकार को विवादित अधिसूचना रद्द कर देना चाहिये इसी में राष्ट्र का व सभी का हित है।

1200 साल प्राचीन मैसूर के पास भगवान पार्श्वनाथ मन्दिर पर उपसर्ग

दिगम्बर जैन मन्दिर को श्वेताम्बर मन्दिर बनाने की चेष्टा

तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं तीर्थ संरक्षिणी महासभा के वरिष्ठ पदाधिकारी श्री विनोद बाकलीवाल, मैसूर के प्रयासों से टला

- डॉ. बिमल जैन, मैसूर

मैसूर के पास यम गुम्बा ग्राम स्थित पाषाण शिलाओं से निर्मित प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की 1200 साल पुरानी साढ़े 4 फीट की काले पाषाण से बनी मनोहारी खड्गासन प्रतिमा प्रतिष्ठित है। हाईवे से दूरी होने के कारण कम ही जैन श्रावक वहाँ पहुँच पाते हैं, लेकिन पूजा अभिषेक सेवादार पुजारी द्वारा नियमित रूप से होता है। सन् 1980 में कर्नाटक के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री देवराज उर्ष ने इस प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था।

कुछ माह पूर्व दिगम्बर जैन समाज को अनभिज्ञ रखते हुए श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज के कुछ लोगों ने मन्दिर का जीर्णोद्धार प्रारंभ कर दिया। 31 जुलाई 2022 को लगभग 200 श्वेताम्बर श्रावकगण यम गुम्बा मन्दिर में दो श्वेताम्बर आमनाय की मार्बल की मूर्तियाँ लेकर आये। उन्होंने हमारे पुजारी को उन्हें मन्दिर में प्रतिष्ठित करने को कहा। दिगम्बर जैन मन्दिर में श्वेताम्बर आमनाय की मूर्तियाँ स्थापित करने का पुजारी ने विरोध किया। श्वेताम्बर श्रावकों ने स्वयं ही दोनों मूर्तियाँ गर्भ गृह में विराजित मूलनायक प्रतिमा के बाहर दोनों ओर स्थापित कर दीं। श्वेताम्बर श्रावक मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके वहाँ से दोपहर में वापस प्रस्थान कर गए।

इस घटना की सूचना समीपस्थ समाज द्वारा मैसूर के श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कर्नाटक अध्यक्ष श्री विनोद बाकलीवाल को दी गई। उन्होंने कनकगिरि के भट्टारक स्वस्तिश्री भुवनकीर्ति जी स्वामी से तुरन्त संपर्क किया और उनका सहयोग एवं मार्गदर्शन मांगा। उस समय भट्टारक स्वामी जी समीप के सालीग्राम में मानस्तम्भ के लोकार्पण समारोह में आये हुये थे। श्री विनोद बाकलीवाल मैसूर से स्वामी जी के पास पहुँचे। भट्टारक स्वामी जी ने चार श्रावकों को और साथ लिया और सब यम गुम्बा ग्राम पहुँचे। भट्टारक स्वस्तिश्री एवं श्री विनोद बाकलीवाल ने प्रभावी कार्यवाही करते हुए मन्दिर के गर्भगृह के बाहर दोनों साइड में फिक्स की गई श्वेताम्बर आमनाय की दोनों मूर्तियाँ वहाँ से हटाकर सविनय हाल में पाटे पर रखवा दी। उसी समय श्वेताम्बर समाज मैसूर के मन्दिर के ट्रस्टी व पदाधिकारी सहित लगभग 12 श्रावक-श्राविकाओं ने मन्दिर में प्रवेश किया। श्री विनोद बाकलीवाल ने वाक्चातुर्य से श्वेताम्बर पदाधिकारियों एवं श्रावकों को समझाया कि प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर में श्वेताम्बर मूर्तियाँ स्थापित करने का प्रयास जैन समाज में सौहार्द के विपरीत है और यह समाजहित में होगा कि मैसूर श्वेताम्बर समाज उन्हें सविनय वापिस ले जाकर उपयुक्त स्थान पर स्थापित करें। विनोद जी को सकल मैसूर समाज में सम्मान से देखा जाता है और उनके आग्रह को संकोच होते हुए भी मैसूर श्वेताम्बर समाज ने स्वीकार कर लिया और दोनों मूर्तियाँ तथा पूजा का सामान लेकर वहाँ से प्रस्थान कर गए। समाचार पाकर मैसूर क्षेत्र के दिगम्बर जैन समाज ने राहत की सांस ली और कर्नाटक दिगम्बर समाज में खुशी की लहर दौड़ गई।

ज्ञातव्य है कि श्री विनोद बाकलीवाल कर्नाटक के प्राचीन दिगम्बर जैन तीर्थों, मन्दिरों और पुरावशेषों के संरक्षण, संवर्धन और सुरक्षा के लिए देशभर में विख्यात हैं। चाहे भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली महामस्तिकाभिषेकों का अवसर हो या श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोल में कोई भी आयोजन हो, कर्मयोगी भट्टारक स्वस्तिश्री चारूकीर्ति जी महास्वामी हमेशा व्यवस्थाओं और विशेषकर भोजन जलपान व्यवस्था के लिए मैसूर से श्री विनोद बाकलीवाल को श्रवणबेलगोल बुलाते हैं। मूडबिद्री, हुमचा आदि में दिगम्बर जैन समाज का कोई भी वृहद आयोजन हो वहाँ की व्यवस्था श्री विनोद बाकलीवाल ही संभालते हैं। विशेषतया उनके द्वारा मैसूर से लाया हुआ चन्दन सुगन्धित हर्बल मिनरल वाटर सभी को बहुत भाता है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचन्द्र पहाड़िया एवं महामंत्री
श्री सन्तोष पेंढारी तथा श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज गंगवाल और महामंत्री श्री प्रकाशचन्द्र बड़जात्या ने आये हुये उपसर्ग को सहजता से टालने के लिये उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

हमारे नये सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री मनीष रामावतारजी राणा
जयपुर (राज.)

मनीष कमलप्रकाश लुहाडिया
जयपुर (राज.)

श्री पदमचंद भंवरलाल जैन
जयपुर (राज.)

डॉ. सुनीलकुमार महावीरप्रसाद जैन
जयपुर (राज.)

एडवो. महेंद्रशाह सुपुत्र एम.पी. शाह
जयपुर (राज.)

श्री अमरचंद मानमल जैन
जयपुर (राज.)

श्री राजेंद्र कुमार चिरंजीलाल जैन
दुर्गापुरा जयपुर (राज.)

श्री पारस पदमचंद जैन (बिलाला)
दुर्गापुरा जयपुर (राज.)

श्री सुरेन्द्र जगदीशचंद जैन
वैशालीनगर जयपुर (राज.)

सी.ए. अंकित जैन सुपुत्र सी.ए. डी.सी. जैन
जयपुर (राज.)

श्री रविन्द्र टीकमचंद बिलाला
दुर्गापुरा जयपुर राज.

श्री विकास गजेन्द्र कुमार जैन
वैशालीनगर जयपुर (राज.)

श्री सचिन कुमार महेंद कुमार जैन
वैशालीनगर जयपुर (राज.)

श्री शांति सोभागमल पाटनी (जैन)
वैशालीनगर जयपुर (राज.)

श्री केशव महावीर कुमार गोदिका
सांगानेर जयपुर (राज.)

श्री सुधीर सुरेशचंद गोधा (जैन)
जयपुर (राज.)

श्री निर्मल कुमार कुंदनमलजी पांडे
जयपुर (राज.)

श्री कुन्तीलाल शांतिलाल जैन
जयपुर (राज.)

श्री मनोजकुमार महेशचंद्र जैन
जयपुर (राज.)

श्री विनीत अशोक जी काला
जयपुर (राज.)

श्री संदीप महावीरप्रसाद सोगानी
गाँधीनगर जयपुर (राज.)

श्री मनोजकुमार हरकचंद सोगानी
दुर्गापुरा जयपुर (राज.)

श्री राजकुमार कपूरचंद काला
जयपुर (राज.)

श्री दर्शन भागचंदजी जैन
दुर्गापुरा जयपुर (राज.)

श्री सुनील धूपचंद सोगानी
दुर्गापुरा जयपुर (राज.)

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/ 2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi August 2022
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/ 2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : UMANATH RAMAJOR DUBEY